चराग़े-दिल

(ग़ज़ल-संग्रह)

न बुझा सकेंगी ये आँधियाँ,
ये चराग़े-दिल है दिया नहीं।

—देवी नागरानी

चराग़े-दिल

(ग़ज़ल-संग्रह)

देवी नागरानी

सरला प्रकाशन, दिल्ली

ISBN : 81-88911-36-4

मूल्य : **दो सौ रुपए (रु. 200.00)**
दस डॉलर ($ 10.00)

प्रकाशक : सरला प्रकाशन
1586/1ई, नवीन शाहदरा
दिल्ली-110032

संस्करण : प्रथम, 2007

आवरण चित्र : देवी नागरानी

सर्वाधिकार : लेखकाधीन

अक्षरांकन एवं मुद्रण : रचना एंटरप्राइजिज, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

CHARAGE DIL (Poetry) *by* Devi Nangrani

अहसासों का गुलदस्ता

मेरे तीनों बच्चों
कविता, दिव्या और दीपक को
जिनसे स्नेह करते और पाते
हुए साहित्य की राहों में
यात्रा कर रही हूँ।

—देवी नागरानी

देवी दिलकश ज़ुबान है तेरी

श्रीमती देवी नागरानी मूलतः सिंधी-भाषी हैं—सम्प्रति वे न्यूजर्सी की प्रवासी हैं। उनका सिंधी में ग़ज़ल-संग्रह 'ग़म में भीगी ख़ुशी' सन् 2004 में पहले ही प्रकाशित हो चुका है। हिंदी ग़ज़लों में भी उनकी अभिरुचि उल्लेखनीय है। हिंदी साहित्य के क्षेत्र में उनका यह आगमन शुभ एवं स्वागत योग्य है उनके द्वारा प्रस्तुत हिंदी ग़ज़ल-संग्रह **'चराग़े-दिल'** इस दिशा में एक अच्छा प्रयास है।

'ग़ज़ल' उर्दू साहित्य की एक ऐसी विधा है जिसका जादू आज सबको सम्मोहित किए हुए है। ग़ज़ल ने करोड़ों दिलों की धड़कनों को स्वर दिए हैं। इस विधा में सचमुच ऐसा कुछ है जो आज यह अनगिनत होठों की थरथराहट और लेखनी की चाहत बन गई है। ग़ज़ल कहने के लिए हमें कुशल शिल्पी बनना होता है ताकि हम शब्दों को तराश कर, उन्हें मूर्त रूप दे सकें, उनकी जड़ता में अर्थपूर्ण प्राणों का संचार कर सकें तथा ग़ज़ल के प्रत्येक शे'र की दो पंक्तियों (मिसरों) में अपने भावों, उद्‌गारों, अनभूतियों आदि के उमड़ते हुए सैलाब को 'मुट्ठी में आकाश, कठौती में गंगा, कूजे में दरिया, बूँद में सागर के समान समेट कर भर सकें। ग़ज़ल चूँकि एक गेय कविता है, अतः उसका किसी बहर अथवा छंद में होना अपरिहार्य है। यह ग़ज़ल-लेखन की पहली शर्त है। श्रीमती देवी नागरानी ने इस शर्त का सख़्ती से पालन किया है। प्रसन्नता की बात है कि वे तक़्ती, से भलीभाँति परिचित हैं। वे कथ्य एवं शिल्प, दोनों को ही, समान रूप से महत्व देने की पक्षधर हैं। उनमें सीखने की उत्कट अभिलाषा एवं ललक है। वे बहुत ही परिश्रमी हैं। ये सभी बातें ग़ज़ल के नितांत हक़ में हैं। उन्हीं के शब्दों में—

यूँ ख्यालों में पुख़्तगी आई
बीज से पेड़ बन गए जैसे

उनका हृदय जज़्बात से परिपूर्ण है, इतना कि उन्हें पूर्णरूप से व्यक्त करने के लिए शब्द कम पड़ जाते हैं—

दिल के जज़्बात मैं लिखूँ कैसे
कम है लफ्ज़ों का सिलसिला देखो

वो सोच अधूरी कैसे सजे
लफ़्ज़ों का लिबास ओढ़े न कभी

उनकी ग़ज़लों से उनके नारी हृदय की संवेदनशीलता, कोमलता, स्त्रीजनित भावनाओं, अनुभूतियों, उद्‌गारों एवं व्यथा-कथा का अंदाज़ा लगाया जा सकता है—

हमने अश्कों से लिखी थी जो ग़ज़ल
दुख है ये तुम को सुना पाए न हम

कुछ तो ग़ुस्ताख़ियों को मुहलत दो
अपनी पलकों को हम झुकाते हैं

वो मेरे सामने से गुज़रे हैं
मुझ से हो जैसे बेख़बर, देखो

सामना उनसे हो नहीं सकता
बस इसी से उदास रहती हूँ

किसी भी बात को अपनी निजी शैली में, नए अंदाज से कहने का उनका अपना ही सलीक़ा है, जो देखते ही बनता है इस प्रकार उन्होंने, अपनी तर्जे-अदा को एक नया आयाम दिया है—

सुबह के इंतज़ार में शायद
रात जागी है क्या ज़रा देखो?

दूसरा ताज कोई बनाएगा क्या
ख़ून में प्यार की है कहाँ गर्मियाँ

पत्थर का शहर है ये, पत्थर के आदमी हैं,
इस ख़ामशी को देखो, उनसे निभा रही है

धूप और छांव का खेल हुआ
ख्वाब को जैसे ख्वाब छले

उनको अफसोस है कि आज अपने इतने पराए हो गए हैं कि—

भर गया मेरा दिल तो अपनों से
सुख से ग़ैरों के बीच रहती हूँ

वफ़ाओं में मेरी जफ़ा छा गई
तबीयत मुहब्बत से उक्ता गई

प्यार की बात तो दूर, नफ़रतों से चूर आज का आदमी बहुत ही क्रूर और निर्मम हो चुका है, संवेदना जैसे मर गई है। मानवीय मूल्यों का अवमूल्यन हो चुका है। मुखौटों का ज़माना है। अपसंस्कृति पनप रही है। सुसंस्कार परित्यक्त हो रहे हैं। सभी क्षेत्रों में भ्रष्टाचार व्याप्त हैं। समग्ररूप से श्रीमती देवी नागरानी ने इन्हें ऐसी 'करतूतों' का नाम दिया है, जो लज्जा से सर झुका देती हैं—

देखकर आदमी की करतूतें
आती मुझको रही हया जैसे

उनका निम्नलिखित शे'र, डा. इक़बाल के एक विख्यात आरिफ़ाना शे'र—ख़ुदी को कर बुलंद इतना कि हर तद्बीर से पहले/ख़ुदा बंदे से ख़ुद पूछे, बता तेरी रज़ा क्या है—से प्रेरित है, जो डा. इक़बाल के प्रति उनकी विनम्र श्रद्धांजलि (ख़िराजे-अक़ीदत) का परिचायक है—

ख़ुद-ब-ख़ुद आ मिले ख़ुदा मुझ से
कुछ तो एहसास बंदगी में हो

'पत्थर के शहर' और अपनी 'ख़ामोशी' को अपने एक शे'र में उन्होंने इस तरह ढाला है कि जड़ शब्दों में जान-सी पड़ गई है, पत्थर मानो बोलने लगे हैं—

एक शाइर आके इक दिन पत्थरों के शहर में
मेरी ख़ामोशी को 'देवी' तर्जुमानी दे गया

अपनी सहनशीलता को उन्होंने निम्न पंक्तियों में शिद्दत से रेखांकित करते हुए कहा है—

मेरे हाथ आईं बुराइयाँ
मेरी नेकियों को गिला नहीं

'सूनामी' की विनाशलीला से श्रीमती देवी नागरानी ने द्रवित होकर जो पंक्तियाँ कही हैं, वे बहुत ही मार्मिक बन पड़ी है—

कई बह गए 'देवी' सपने सुहाने
वो बारिश थी या आफ़ते-नागिहानी

अंत में उन्हीं के शब्दों में—

तुझ को पढ़ते रहे तभी जाना
'देवी', दिलकश ज़बान है तेरी

बकौल श्रीमती नागरानी,—"लेखन कला एक सफर है जिसकी मंज़िल शायद नहीं होती ताउम्र सहरा की मृगतृष्णा जैसे लिखते रहें, उतना और ज़्यादा लिखने की प्रेरणा उत्पन्न होती है।"

उनका हिंदी में ग़ज़ल-लेखन का यह पहला-पहला सद्प्रयास है,

नागरानी की ये तो शुरुआत है
और होने को ग़ज़लों की बरसात है
हैं अभी और उनसे उमीदें बहुत
उनके दिल में बड़ा शोरे—जज़्बात है

हार्दिक मंगल कामनाओं सहित

ए-1, वरदा,
कीर्ति कॉलेज के निकट
वीर सावरकर मार्ग, दादर (प.)
मुंबई-400028

—आर.पी. शर्मा 'महर्षि'

अनुभूतियों की सच्चाई

देवी नागरानी का पहला ग़ज़ल-संग्रह अब आपके हाथ में है। यह सुखद आश्चर्य का विषय है कि वे अमेरिका में रहते हुए हिंदी में ग़ज़ल लिख रही हैं और हिंदी के प्रवासी साहित्य में अपना पहला कदम मजबूती से रख रही हैं। इस ग़ज़ल-संग्रह में उनकी 120 ग़ज़लें संकलित हैं और इनका चयन उन्होंने मुंबई, भोपाल आदि में रहते हुए उर्दू के प्रसिद्ध ग़ज़लकारों के सहयोग-परामर्श से किया है। मैंने उनकी कुछ ग़ज़लें पढ़ी हैं और मैंने पाया कि उनकी ग़ज़लें आशिक-माशूक के प्रेम-व्यवहारों तथा बेवफ़ाई के दर्द तक सीमित नहीं है। उनका ग़ज़ल संसार और उनकी संवेदनाएँ बहुआयामी हैं और ज़िंदगी के रंगों की तरह रंग-बिरंगी हैं। देवी नागरानी की इन ग़ज़लों में प्रेम तो है, उसका दर्द भी है, किंतु ज़िंदगी के दूसरे ग़म और खुशियाँ भी हैं, 'घर' की व्यापक और गहरी बेचैनी है, 'बेख़ुदी' में डूबने की लालसा है, सपनों के टूटने की व्यथा है, दुनिया के आल-जाल हैं और साथ ही अपने वतन की सौंधी मिट्टी की खुशबू है जिसमें प्रेमी की याद भी घुलमिल गई है। ग़ज़लों की ज़ालिम दुनिया में वतन की यह मुहब्बत उसे ख़ुशगवार बना देती है और अमेरिका में रहने वाली इस कवयित्री को हिंदुस्तान से जोड़ देती है। देवी नागरानी का यह ग़ज़ल-संग्रह अनुभूतियों की सचाई, जिंदगी के बहुरंगी दृश्यों, वतन की मुहब्बत और दिल की छूने वाली सीधी-सरल भाषा के कारण प्रवासी साहित्य में अपनी विशिष्ट पहचान बनाएगा और पाठकों को वर्षों तक आनंदित करता रहेगा।

—कमल किशोर गोयनका

प्रोफेसर (भूतपूर्व), हिन्दी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
A-98, अशोक विहार, फेज-1
दिल्ली-110052
फोन : 91-11-27219251
3 फरवरी, 2007

अपने वजूद की तलाश में

देवी नागरानी उन शाइरात में नहीं है जो क़िस्मत से हिसाब माँगती हैं, बल्कि वो ऐसी शाइरा हैं जो क़िस्मत को हिसाब तो देना चाहती हैं लेकिन पूरा हिसाब उन्हें ख़ुद हासिल नहीं हुआ है। इसलिए दूसरे से हिसाब पूछ रही हैं। बात समझ में आने वाली भी है।

जब दिल और घर दोनों जल चुके हों और भले ही वो अँधेरे से बाहर आ गई हों मगर उनके लिए उजाला भी अँधेरे की ही पैदावार और देन है। ऐसे में अहसास की लौ इतनी तेज़ हो जाती है कि वो उन परिंदों को नज़र अंदाज़ नहीं कर सकीं जो परवाज़ से पहले ही डर गए और उनके वे ही बालो-पर नहीं रहे जिन पर उन परिंदों को नाज़ था।

ख़्वाहिशों को लहू पिला-पिलाकर अपने वजूद की तलाश, जज़्बात को शब्दों में व्यक्त करने का तरीक़ा तो बताती हैं मगर मेरे ख़याल में अभी देवी नागरानी को शाइरी और फ़न की गहराइयों और उसकी तहों तक पहुँचने की बहुत ज़रूरत है। अगर वो ऐसा कर पाएँ तो फिर उन्हें ज़िंदगी को और क़िस्मत को हिसाब देने के लिए किसी से जवाब माँगने की ज़रूरत नहीं होगी।

मेरी मुख़लिसाना और शाइराना नेक ख़्वाहिशात उनके साथ हैं।

—अहमदवसी

के-304, हंज़र नगर
पम्प हाउस, अँधेरी (ईस्ट)
मुम्बई-400093
5 फरवरी, 2007

'चराग़े-दिल' के आईने में—देवी नागरानी

हमारी ज़िंदगी में कभी ऐसे इत्तिफ़ाकात भी रुनुमा होते हैं जो हमेशा के लिए यादगार बनकर रह जाते हैं। हुस्ने-इत्तिफ़ाक से एक साल कब्ल देवी नागरानी से मेरी पहली मुलाकात हुई। वे बज़्मे-अर्बाबे-सुख़न शिवाजी नगर की माहाना शैरी नशिस्त (साहित्यिक गोष्ठी) में तशरीफ़ लाई थीं।

इस नशिस्त में देवी ने तरन्नुम से अपना कलाम सुनाकर श्रोताओं को ख़ासा प्रभावित किया था। इसके दो-तीन माह बाद अपने ख़ानदानी मित्र श्री भेरवानी जो ख़ुद अच्छे हास्य कवि हैं, उनके साथ देवी मेरे घर तशरीफ़ लाईं। गुफ़्तगू के दौरान देवी ने अपने कलाम पर मुझसे इस्लाह लेने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की। फ़ितरतन मैंने भी उनकी ख़्वाहिश का एहतेराम किया। बस यहीं से मशवराए सुख़न का सिल्सिला चल पड़ा जो आज भी बदस्तूर जारी है।

देवी, न्यू जर्सी (अमेरिका) के एक शिक्षण संस्थान में शिक्षिका हैं। जब छुट्टियों में उनका भारत आना होता है तभी उनसे मुलाकात हो पाती है। इस तरह अभी तक चार-पाँच मुलाकातों पर मुश्तमिल देवी से मेरे परिचय की उम्र सिर्फ एक साल की है। लेकिन किसी की शख़्सियत को जानने-समझने के लिए एक साल की मुद्दत भी काफ़ी होती है।

देवी बहुत ही सुलझे हुए व्यक्तित्व और किरदार की मालिक हैं। वे बहुत नर्म लहजे और प्रभावित करने वाली भाषा में बात करती हैं। मैं समझता हूँ कि उनके किरदार पर उनके 'देवी' नाम का काफ़ी प्रभाव है। मुझे यह तो नहीं मालूम कि वे कब से शैर कह रही हैं लेकिन, जब वे शाइरी पर गुफ़्तगू करती हैं तो महसूस होता है कि उनकी शाइरी का सफ़र पिछले कई सालों से जारी है। वे महज़ शौक़िया या बराए नाम शाइरी नहीं करतीं बल्कि उनका ज़ौक़े-शाइरी जुनून की हदों को छूता हुआ दिखाई देता है। ख़ुशी की बात तो यह है कि वे ग़ज़ल का छंद विधान समझती हैं तथा बहर और वज़्न का इल्म भी रखती हैं। उन्हें शैर की तक्तीअ करने पर भी उबूर हासिल है।

हालाँकि देवी ने दोहे और हाइकू भी ख़ूब कहे हैं लेकिन बुनियादी तौर पर वे एक ग़ज़ल गो शाइरा हैं। यहाँ पर उन्हें यह मशवरा देने की ज़रूरत है कि वे अपनी

ग़ज़ल में उर्दू शब्दावली के सही इस्तेमाल पर विशेष ध्यान दें। बहरहाल उनकी शाइरी उनके तज्रबों को केंद्र में लाती हैं। वे जो कुछ देखती और महसूस करती हैं उसे एक ख़ास अंदाज़ से शैर के साँचे में ढाल देती हैं। उनकी कल्पना की उड़ान बहुत बुलंद है लिहाज़ा शाइरी में गहराई और गीराई पाई जाती है।

ज़ेरे नज़र किताब 'चराग़े-दिल' में ऐसे बहुत से शैर मौजूद हैं जो सीधे दिल को छू जाते हैं। कुछ अश्आर देखिए—

अच्छा, तो मेरे क़त्ल में मेरा ही हाथ है,
ये तुहमतें तमाम गिरे सरपे मार दे

शीशे के मेरे घर के हैं दीवारो-दर सभी,
कैसे कहूँ के संग नहीं आएगा कभी

मैं अँधेरे से आ गई बाहर,
जब से दिल और घर जला मेरा

आती नहीं है प्यार की ख़ुश्बू कहीं से अब,
खिलना ही जैसे प्यार के फूलों का कम हुआ

मुझे यक़ीन है कि 'चराग़े-दिल' आज के ग़ज़ल संग्रहों में एक महत्वपूर्ण इज़ाफ़ा समझा जाएगा और ग़ज़ल प्रेमियों में बेहद पसंद भी किया जाएगा।

घाट कोपर, मुम्बई
4 फरवरी 2007

—महमूदुलहसन 'माहिर'

'देवी नागरानी अमरीकी हिंदी साहित्य की एक सशक्त हस्ताक्षर हैं'

देवी नागरानी से मेरा परिचय 'प्रवासिनी के बोल' के संपादन के दौरान हआ। उनकी ग़जलों और कविताओं के विचारों ने मन को छू लिया था; लेकिन उनकी कर्मठता ने और भी प्रभावित किया।

मुझे याद है वह भारत में थीं और E-mail के ज़रिये उन्होंने तुरंत कविताएँ संग्रह हेतु भेजी थीं। U.S.A. वापस आने पर टेलीफोन पर बातें होती रहतीं थीं, मूलतः सिंधी का लहज़ा और मिठास उनकी जुबान में हैं।

न्यूयार्क के सत्यनारायण मंदिर में कवि सम्मेलन (2006) में अपने कोकिल कंठ से जब उन्होंने गज़ल सुनाई तो महफ़िल में सब वाह वाह कह उठे। किसी की फरमाइश थी कि वे सिंधी की भी गज़ल सुनाएं और तुरंत एक गजल का उन्होंने हिंदी अनुवाद पहले किया और सिंधी में उसे गाया। सब लोगों को देवी की गज़ल ने मोह लिया। तो ये थी मेरी देवी से रूबरू पहली मुलाकात। हमने एक दूसरे को देखा न था, बस बातचीत हुई थी। मेरे कविता पाठ के बाद वो उठकर आईं—मुझे गले लगाया और बोलीं—"अँजना, मैं तुम्हें मिलने ही इस कवि सम्मेलन में आई हूँ।"

इस तरह सखी भाव जो पैदा हुआ वो यहाँ की भागती-दौड़ती जिंदगी में बराबर चल रहा है। कभी E-mail के ज़रिये तो कभी टेलीफोन पर।

"प्रवासिनी के बोल" छपकर आई तो उन्होंने उस पर एक छोटा संग्रह Computer कला के माध्यम से अंग्रेजी-हिंदी में मेरी तस्वीर के साथ, पुस्तक के कवर पर अपनी पंक्तियाँ जड़कर मुझे भेंट स्वरूप भेजा। इस पुस्तक के English Library द्वारा होने वाले समारोह में (9th Dec. 2006) शामिल नहीं हो पा रही थी, क्योंकि भारत यात्रा तय थी। मुझे याद है अपने व्यस्त कार्यक्रम में भी "प्रवासिनी के बोल" पर कार्य करती रही। एक गज़ल एक recorder में tape करके मुझे दे गई कि मैं उस दिन वहाँ न रहूँगी, पर मेरी आत्मा उस दिन जरूर वहीं होगी। प्रवासिनी के नाम पर वह सुन्दर ग़ज़ल है।

वादे-शहर वतन की चंदन सी आ रही है
यादों के पालने में मुझको झुला रही है

Queen Pustakalaya में New Amrican Programme के Director Shri Fred Gitner ने 'प्रवासिनी के बोल' का विमोचन किया और मैंने देवी द्वारा लिखा "प्रवासिनी के बोल No.2" का विमोचन किया और उनकी ग़ज़ल सुनवाई। देवी तन से भारत में थी और मन से Auditorium में थीं। सर्मष्टता, निर्मल मन, भाषा के लगाव का परिणाम आपके सामने है "चराग़े-दिल"। देवी आध्यात्मिक रास्तों पर चलने वाली एक शिक्षिका का मन रखने वाली कवयित्री है, इसलिये उसकी गज़लों में सच्चाई और जिन्दगी को खूबसूरत ढंग से देखने का एक अलग अंदाज़ है। उनकी लेखनी में एक सश्क्त औरत दिखाई देती है जो तूफानों से लड़ने को तैयार है।

जिसे धूप दुख की न छू सके
कोई ऐसा दुनिया में घर नहीं

हमने तो खुद को आप संभाला है आज तक
अच्छा हुआ किसी का सहारा नहीं मिला

जिंदगी हसरतों का दिया है मगर
आंधियों में वही टिमटिमाता रहा

गज़ल में नाज़ुकी पाई जाती हैं उसका असर देवी की ग़ज़लों में दिखाई पड़ता है। उदाहरण के तौर पर देखिये—

भटके हैं तेरी याद में जाने कहाँ कहाँ,
तेरी नज़र के सामने खोये कहाँ कहाँ।

न तुम आए न नींद आई निराशा भोर ले आई
तुम्हें सपने में कल देखा, उसी से आंख भर आई

उसे इश्क़ क्या है पता नहीं
कभी श्म्अ पर वो जला नहीं

देवी की ग़ज़लों में आशा है, ज़िन्दगी से लड़ने की हिम्मत है व एक मर्म है जो दिल को छू लेता है। ग़ज़ल-संग्रह का शीर्षक "चराग़े-दिल" बहुत कुछ कह जाता है। अमरिका की मशीनी ज़िन्दगी में अपनी संवेदनाओं को बचाए रखना और अंग्रेज़ी वातावरण में हिंदी की ग़ज़लें कहना मायने रखता है।

मैं दिल की गहराइयों से देवी नागरानी को शुभकामनाएँ देती हूँ—

वो ऐसे ही और बहुत चराग़ रौशन करें; ताकि भाषा का कारवां चलता रहे।

83-64 टालबोट स्ट्रीट
अपार्ट # 2 ए, क्यू गार्डन
न्यू यार्क, एन वाई 11415 (यू.एस.ए.)
26 फरवरी 2007

—डॉ. अँजना संधीर

'चराग़े-दिल' हमेशा जगमग रहे

उर्दू अदब विशेषकर गज़ल में खड़ी बोली को निखारने-सँवारने में तो योगदान दिया ही है भारतीय साहित्य को नई चेतना भी दी है ग़ज़ल अपने खास अंदाज़ और चुटीलेपन के कारण आज सर्वाधिक लोक प्रिय विधा है। अरबी-फारसी के कठिन शब्दों का मोह छोड़कर आज आम बीतचीत की भाषा में गज़लें कही जा रही हैं। लेकिन गज़ल की रवायत और तग़ज़्ज़ुल को बरकरार रखते हुए असरदार शेर कहना आसान नहीं है।

मुझे खुशी है कि देवी नागरानी जी की अधिकांश गज़लें पूरी आबो-ताब के साथ रौशन है। प्रस्तुत गज़ल-संग्रह "चराग़े-दिल" से एक ओर जहाँ साहित्य-जगत जगमग होगा, वहीं दूसरी आरे आम पाठकों के ज़हन भी रौशन होंगे।

दुआ करता हूँ कि कि देवी नागरानी जी का चराग़े-दिल हमेशा ही जगमग रहे—टिमटिमाता रहे और इसकी लौ कभी मद्धम न हो। "चराग़े-दिल" के प्रकाशन पर आत्मीय बधाई।

—दीक्षित दनकौरी

15 डी.डी.ए. फ्लैट्स
मानसरोवर पार्क, शाहदरा
दिल्ली-110032
27 फरवरी 2007

दो शब्द

श्रीमती देवी नागरानी को जब मैं पहली बार श्री आर.पी. शर्माजी के घर पर मिली, वो मेरे साथ यूँ पेश आई जैसे मैं उसकी बिछड़ी हुई सहेली हूँ। किसी को एक पल में अपना बना लेना यह वो खूबी है जो बहुत कम लोगों में मिलती है। वो एक कर्मठ, हिम्मतवान और जां-बाज़ महिला है। उनको देखकर हिंदुस्तानी नारी पर मुझे गर्व होता है। इनमें एहसास की नर्मी है और हालात की आँधीयों से लड़ने की शक्ति भी उनके शेरों में उनके अनुभवों का निचोड़ है। अमेरिका जैसे देश में रहकर भी वे अपने संस्कार नहीं भूली। भारतीय महिला की गरिमा और महिमा का वो जीवंत उदाहरण है। उनके कुछ शेर दिल की गहराइयों को छू जाने वाले होते हैं मेरे कुछ पसंदीदा अशआर प्रस्तुत हैं।

आँधियों के भी पर कतरते हैं
हौसले जब उड़ान भरते हैं

उठाना है आसान औरों पे उंगली
कभी खुद पर उंगली उठाकर तो देखो

इल्म अपना हुआ तो जाना है
मैं ही कुरआन, मैं ही गीता हूँ।

601 विघ्नहर्ता बिल्डिंग
शिवाजी पथ
थाणे-400602

—मरियम गज़ाला

मेरी तरफ़ से

कलम मेरे अंतर्मन की ख़ामोशियों की ज़ुबान बन गई है। कविता लिखना एक स्वाभाविक क्रिया है, शायद इसलिए कि हर इन्सान में कहीं न कहीं एक कवि, कलाकार, चित्रकार और शिल्पकार छिपा हुआ होता है। मन के सागर में जब अहसास की लहरें उठती हैं तो उन्हें ठहराव दुनिया के तट पर मिले न मिले पर क़लम की ज़ुबानी काग़ज पर ज़रूर मिल जाता है।

कुछ ख़ुशी की किरणें अँधेरे से झाँकती हुई, कुछ पिघलता दर्द आँख के पोर से बहता हुआ, कुछ शबनमी सी ताज़गी अहसासों में तो कभी भँवर गुफा की गहराइयों से उठती उस गूँज को सुनने की तड़प मन में जब जाग उठती है तब कला का जन्म होता है। सोच की भाषा बोलने लगती है, चलने लगती है, कभी तो चीख़ने भी लगती है। यह कविता बस और कुछ नहीं, केवल मन के भाव प्रकट करने का एक माध्यम है, चाहे वह गीत हो या ग़ज़ल, रुबाई हो या कोई लेख, इन्हें शब्दों का लिबास पहनाकर एक आकृति तैयार करते हैं जो हमारी सोच की उपज होती है—

फ़िक्र क्या, बहर क्या, क्या ग़ज़ल गीत क्या,
मैं तो शब्दों के मोती सजाती रही

मेरे मन की बस्तियों का विस्तार भी उतना ही बड़ा है जितना विशाल सागर होता है। दिल के रोशन दिये ज़मीरों को ज़िंदा रखने के लिए बहुत हैं। अँगड़ाइयाँ लेता हुआ यह मानव मन कभी किसी डाल पर तो कभी किसी और शाख पर बैठ सुस्ता लेता है, कुछ पल सुकून के, कुछ ग़म के, कभी सुख के तो कभी तन्हाइयों के।

"चराग़े-दिल" इन्हीं अहसासों का गुलदस्ता है जिसमें मेरे मन के गुलशन के अनेक फूल हैं जो कभी महकते हैं कभी मुस्कुराकर मुरझा जाते हैं तो कभी पतझड़ के मौसम के साए में बिखर जाते हैं। पर, दिल का चराग़ फिर भी जलता रहता है। जलते बुझते इन नन्हें चराग़ों की रौशनी से अपने हृदय के आँगन को रौशन रखने की कोशिश में ये शब्द बोलने लगते हैं जिन्हें हम ग़ज़ल कहते हैं।

नारी मन चाहे वह वतन में हो चाहे वतन से दूर, प्रवासी होकर भी अपने धड़कते दिल में अपने देश की मिट्टी की सौंधी सी महक लिए घूमता है। मैं देश से दूर हूँ पर देश मुझसे दूर नहीं यही मान्यता रही है मेरी। हर प्रवासी का दिल जब धड़कता है तो

हिंदुस्तान का तिरंगा तथा राष्ट्रीय गीत की गूँज उसमें शामिल होती है।

लेखन कला एक सफ़र है जिसकी मंज़िल शायद नहीं होती। ताउम्र सहरा की मृगतृष्णा जैसे लिखते रहें, और ज़्यादा लिखने की प्रेरणा उत्पन्न होती है।

अंत से पहले शुरुआत का आगाज़, अँधेरे को चीरने के पहले रौशनी के स्वरूप का आग़ाज़ जरूर होता है। इस सफ़र में जिस मोड़ पर मैं खड़ी हूँ अंतर्मन के शब्दों से दो विनम्र शब्द उन साथियों के लिए कहूँगी जिनके दायरे में खड़े हो पाना अपने आप में एक उपलब्धि है।

ग़ज़ल की है अगर सँकरी डगर भी,
रुका है कब ख़यालों का सफ़र भी। **—महर्षि**

श्री आर.पी. शर्मा 'महर्षि' की तहे दिल से शुक्रगुज़ार हूँ जिन्होंने क़दम-क़दम पर ग़ज़ल लेखन कला की बारीकियों से बहुत ही सरल अंदाज़ में मुझे परिचित कराया। उनके लिए सिर्फ़ यही कह सकती हूँ—

सारा आकाश नाप लेता है,
कितनी ऊँची उड़ान है तेरी

श्री हसन माहिर साहब की दिल से शुक्र गुज़ार हूँ जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर अपनी पारखी नज़र से ग़ज़ल में निखार पैदा करने का बख़ूबी प्रयास किया है। उनकी शान में यह कहना कोई ज़्यादती न होगी—

यूँ तराशा है उनको शिल्पी ने,
जान सी पड़ गई शिलाओं में

श्री अनवारे इस्लाम की मैं विशेषरूप से आभारी हूँ जिन्होंने अपना अमूल्य वक्त देकर मेरी रचनाओं को सँवार कर सरला प्रकाशन से प्रकाशित कराकर आप तक पहुँचाने का काम किया है।

रिश्तों की जकड़न, हालात की घुटन, मन की वेदना से क़ैद और रिहाई नारी मन के इन्हीं अहसासात को 'महर्षि' जी के इस शे'र द्वारा आपके सामने प्रस्तुत करते हुए आपके मन तक पहुँच पाने की उम्मीद से—

निराशाओं के पतझड़ को कोई मधुमास दे दो,
कभी आएगी ऋतु आशाओं की विश्वास दे दो।

20 फरवरी 2007 **—देवी नागरानी**
9-डी, कार्नर व्यू सोसायटी
15/33 रोड, बाँद्रा, मुंबई-400050

अनुक्रमणिका

कितने पिये हैं दर्द के आँसू बताऊँ क्या।	27
दीवारो-दर थे, छत थी वो अच्छा मकान था।	28
देखकर मौसमों का असर रो दिए।	29
उड़ गए बालो—पर उड़ानों में।	30
आँधियों के भी पर कतरते हैं।	31
ताज़गी कुछ नहीं हवाओं में।	32
क्या बहारों का कोई भी मौसम नहीं है।	33
डर उसे फिर न रात का होगा।	34
बारिशों में बहुत नहाए हैं।	35
लबों पर गिले यूँ भी आते रहे है।	36
तारों का नूर लेकर ये रात ढल रही है।	37
अपने जवान हुस्न का सदक़ा उतार दे।	38
बाक़ी न तेरी याद की परछाइयाँ रहीं।	39
सपने कभी आँखों में बसाए नहीं हमने।	40
कैसे दावा करूँ मैं सच्ची हूँ।	41
झूठ, सच के बयान में रक्खा।	42
तू न था कोई और था फिर भी।	43
गर्दिशों ने बहुत सताया है।	44
दर्द बनकर समा गया दिल में।	45
छीन लीं मुझसे मौसम ने आज़ादियाँ।	46
चराग़ों ने अपने ही घर को जलाया।	47
हिज्र में उसके जल रहे जैसे।	48
तेरे क़दमों में सर झुकाया है।	49
दिल को हम कब उदास करते हैं।	50
खयालों-ख़्वाब में ही महफ़िलें सजाता है।	51

हमने चाहा था क्या और क्या दे गई। 52
चोट ताज़ा कभी जो खाते हैं। 53
वो अदा प्यार भरी मुझको लगे है अब तक। 54
ठहराव ज़िंदगी में दोबारा नहीं मिला। 55
जाने क्या कुछ हुई खता मुझसे। 56
अँधेरी गली में मेरा घर रहा है। 57
बड़ा जहान है इसमें, ये सर छिपाने दो। 58
ख़ता अब बनी है सज़ा का फ़साना। 59
बहता रहा जो दर्द का सैलाब था न कम। 60
बुझे दीप को जो जलाती रही है। 61
कोई षड्यंत्र रच रहा है क्या। 62
तर्क करके दोस्ती फिरता है क्यों। 63
कितने आफ़ात से लड़ी हूँ मैं। 64
यूँ उसकी बेवफ़ाई का मुझको गिला न था। 65
रिश्ता तो सब ही जताते हैं। 66
बहारों का आया है मौसम सुहाना। 67
राज़ दिल में छिपाए है वो किस कदर। 68
नहीं उसने हर्गिज़ रज़ा रब की पाई। 69
दीवारो-दर तो ठीक थे, बीमार दिल वहाँ। 70
हक़ीकत में हमदर्द है वो हमारा। 71
सोच को मेरी नई वो इक रवानी दे गया। 72
सोच की चट्टान पर बैठी रही। 73
है गर्दिश में क़िस्मत का अब भी सितारा। 74
ज़िंदगी है ये, ऐ बेख़बर। 75
यूँ मिलके वो गया है के मेहमान था कोई। 76
बद्दुआओं का है ये असर। 77
शबनामी होंठ ने छुआ जैसे। 78
दिल अकेला कहाँ रहा होगा। 79
मजबूरियों में भीगता, हर आदमी यहाँ। 80
वो नींद में आना भूल गए। 81
इक नश्शा सा तो बेख़ुदी में है। 82

मिट्टी का मेरा घर अभी पूरा बना नहीं। 83
वैसे तो अपने बीच नहीं है कोई ख़ुदा। 84
गुफ़्तगू हमसे वो करे जैसे। 85
राहत न मेरा साथ निभाए तो क्या करूँ। 86
छोड़ आसानियाँ गईं जब से। 87
शम्अ की लौ पे जल रहा है वो। 88
ज़ख़्म दिल का अब भरा तो चाहिए। 89
शहर अरमानों का जले अब तो। 90
उसे इश्क़ क्या है पता नहीं। 91
ख़ूबसूरत दूकान है तेरी। 92
अपने मक़्सद से हटाकर तू नज़र। 93
फिर खुला मैंने दिल का दर रक्खा। 94
वफ़ाओं पे मेरी जफ़ा छा गई। 95
छू गई मुझको ये हवा जैसे। 96
किस-किस से बचाऊँ अपना घर। 97
ज़िंदगी फ़ितरतें यूँ निभाती रही। 98
बिजलियाँ यूँ गिरीं उधर जैसे। 99
सुनामी की ज़द में रही ज़िंदगानी। 100
कैसी हवा चली है मौसम बदल रहे हैं। 101
कितनी लाचार कितनी बिस्मिल मैं। 102
कभी न किसी से कड़ी बात करना। 103
ज़िंदगी इस तरह से जीता हूँ। 104
क्या बताऊँ तुम्हें मैं कैसी हूँ। 105
कुछ तो उसमें भी राज गहरे हैं। 106
बेसबब बेरुख़ी भी होती है। 107
बंद हैं खिड़कियाँ मकानों की। 108
ज़िंदगी रंग क्या दिखाती है। 109
ज़माने से रिश्ता बनाकर तो देखो। 110
शहर पत्थरों का नहीं आशना है। 111
रेत पर घर जो अब बनाया है। 112
चलें तो चलें फ़िक्र की आँधियाँ। 113

दर्द से दिल सजा रहे हो क्यों। 114
स्वप्न आँखों में बसा पाए न हम। 115
देखीं तब्दीलियाँ ज़मानों में। 116
लगती है मन को अच्छी शाइर ग़ज़ल तुम्हारी। 117
ज़िंदगी मान लें बेवफ़ा हो गई। 118
पंछी उड़ान भरने से पहले ही डर गए। 119
ग़म के मारों में मिलेगा, तुमको मेरा नाम भी। 120
वो रूठा रहेगा उसूलों से जब तक। 121
जितना भी बोझ हम उठाते हैं। 122
जो मुझे मिल न पाया रुलाता रहा। 123
ख़ुशी का भी छिपा ग़म में कभी सामान होता है। 124
हैरान है ज़माना, बड़ा काम कर गए। 125
न सावन है न भादों है, न बादल का ही साया है। 126
भटके हैं तेरी याद में जाने कहाँ-कहाँ। 127
हम अभी से क्या बताएँ क्या हमारे दिल में है। 128
मिलने की हर ख़ुशी में बिछड़ने का ग़म हुआ। 129
गुज़रे हुए सुलूक पे सोचो न इस कदर। 130
देते हैं ज़ख्म ख़ार तो देते महक गुलाब। 131
क़िस्मत हमारी हमसे ही माँगे है अब हिसाब। 132
आँसुओं को रोक पाना कितना मुश्किल हो गया। 133
कौन किसकी जानता है आजकल दुश्वारियाँ। 134
साथ चलते देखे हमने हादिसों के क़ाफ़िले। 135
मेरा शुमार है ये हज़ारों में जाने क्यों। 136
शहर में उजड़ी हुई देखी कई हैं बस्तियाँ। 137
क्यों मचलता है माजरा क्या है। 138
क्यों ख़ुशी मेरे घर नहीं आती। 139
मेरा वजूद टूटके बिखरा यहीं कहीं। 140
रेत पर तुम बनाके घर देखो। 141
दोस्तों का है अजब ढब दोस्ती के नाम पर। 142
उसे शिकारी से ये पूछो पर कतरना भी है क्या। 143
देखकर तिरछी निगाहों से वो मुस्कराते हैं। 144

◇◇◇

कितने पिये हैं दर्द के, आँसू बताऊँ क्या,
ये दास्ताने-ग़म भी किसी को सुनाऊँ क्या?

रिश्तों के आईने में दरारें हैं पड़ गईं,
अब आईने से चेहरे को अपने छुपाऊँ क्या।

दुश्मन जो आज बन गए, कल तक तो भाई थे,
मजबूरियाँ हैं मेरी मैं उनसे छुपाऊँ क्या।

चारों तरफ़ से तेज़ हवाओं में हूँ घिरी,
इन आँधियों के बीच मैं दीपक जलाऊँ क्या।

दीवानगी में कट गए मौसम बहार के,
अब पतझड़ों के ख़ौफ़ से दामन बचाऊँ क्या।

साजिश मिरे ख़िलाफ़ मेरे दोस्तों की थी,
इल्ज़ाम दुश्मनों पे मैं 'देवी' लगाऊँ क्या।

◇◇◇

दीवारो-दर थे, छत थी वो अच्छा मकान था,
दो चार तीलियों पर कितना गुमान था।

जब तक कि दिल में तेरी यादें जवान थीं,
छोटे से एक घर में सारा जहान था।

शब्दों के तीर छोड़े गये मुझ पे इस तरह
हर जख़्म का हमारे दिल पर निशान था।

तन्हा नहीं है तू ही यहाँ और हैं बहुत,
तेरे न मेरे सर पे कोई सायबान था।

कोई नहीं था 'देवी' गर्दिश में मेरे साथ,
बस मैं, मिरा मुक़द्दर और आस्मान था।

◇◇◇

देखकर मौसमों का असर रो दिए,
सब परिंदे थे बे-बालो-पर रो दिए।

बंद हमको मिले दर-दरीचे सभी,
हमको कुछ भी न आया नज़र रो दिए।

काम आए न जब इस ज़माने के कुछ,
देखकर हम तो अपना हुनर रो दिए।

काँच का जिस्म लेकर चले तो मगर,
देखकर पत्थरों का नगर रो दिए।

हम भी महफ़िल में बैठे थे उम्मीद से,
उसने डाली न हम पर नज़र रो दिए।

फ़ासलों ने हमें दूर सा कर दिया,
अजनबी सी हुई वो डगर रो दिए।

◇◇◇

उड़ गए बालो—पर उड़ानों में,
सर पटकते हैं आशियानों में।

शम्अ पल भरमें जल उठे फिर से
शिद्दतें चाहिए तरानों में।

नज़रे-बाज़ार हो गए रिश्ते,
घर बदलने लगे दूकानों में।

धर्म के नाम पर हुआ पाखंड,
लोग रहते हैं किन गुमानों में।

कट गए बालो—पर मगर हमने,
नक्श छोड़े हैं आस्मानों में।

वलवले सो गए जवानी के,
जोश बाक़ी नहीं जवानों में।

बढ़ गए स्वार्थ इस क़दर 'देवी',
एक घर बट गया घरानों में।

◇◇◇

आँधियों के भी पर कतरते हैं,
हौसले जब उड़ान भरते हैं।

ग़ैर तो ग़ैर हैं चलो छोड़ो,
हम तो बस दोस्तों से डरते हैं।

ज़िंदगी इक हसीन धोखा है,
फिर भी हँस कर सुलूक करते हैं।

राह रौशन हो आने वालों की,
हम चराग़ों में ख़ून भरते हैं।

ख़ौफ़ तारी है जिनकी दहशत का,
लोग उन्हीं को सलाम करते हैं।

कल तलक सच के रास्तों पर थे,
झूठ की रह से अब गुज़रते हैं।

हम भला किस तरह से भटकेंगे,
हम तो रौशन ज़मीर रखते हैं।

आदमी देवता नहीं फिर भी,
बन के शैतान क्यों विचरते हैं।

◇◇◇

ताज़गी कुछ नहीं हवाओं में,
फ़स्ले-गुल जैसे है ख़िज़ाओं में।

हम जिसे मन की शांति कहते,
वो तो मिलती है प्रार्थनाओं में।

यूँ तराशा है उनको शिल्पी ने,
जान-सी पड़ गई शिलाओं में।

जो उतारी थीं दिल में तस्वीरें,
वो अजंता की हैं गुफाओं में।

सच की आवाज़ ही जहाँ वालो,
खो गई वक़्त की सदाओं में।

तू कहाँ ढूँढ़ने चली 'देवी',
बू वफ़ाओं की बेवफाओं में।

◇◇◇

क्या बहारों का कोई भी मौसम नहीं है,
या गुलों की महक में ही कुछ दम नहीं है।

हमने रो-रो के दामन भिगोया है कितना,
आँसुओं से तिरी आँख तक नम नहीं है।

रास आती नहीं थीं बहारें भी मुझको,
इसलिए अब ख़िज़ाओं का मातम नहीं है।

ज़िंदगी अस्ल में तेरे ग़म का है नाम,
सारी ख़ुशियाँ है बेकार अगर ग़म नहीं है।

मौत का मेरे दिल में नहीं ख़ौफ़ 'देवी',
मौत ख़ुद ज़िंदगी से कहीं कम नहीं है।

◇◇◇

डर उसे फिर न रात का होगा,
जब ज़मीर उसका जागता होगा।

क़द्र वो जानता है ख़ुशियों की,
ग़म से रखता जो वास्ता होगा।

बात दिल की निगाह कह देगी,
चुप ज़ुबाँ गर रहे तो क्या होगा।

क्या बताएगा स्वाद सुख का वो,
ग़म का जिसको न ज़ायका होगा।

सुलह कैसे करें अँधेरों से,
रौशनी से भी सामना होगा।

मिलना जुलना है 'देवी' दरया से,
पर किनारों में फ़ासला होगा।

◇◇◇

बारिशों में बहुत नहाए हैं,
आज हम धूप खाने आए हैं।

अश्क जिनके लिए बहाए हैं,
आज वो ख़ुद ही मिलने आए हैं।

लेके माँ की दुआ मैं निकली हूँ,
दूर तक रास्तों में साए हैं।

घिर गई हूँ न जाने किनके बीच,
लोग अपने नहीं पराए हैं।

दिल की बाजी लगाई है अक्सर,
गो कि हर बार मात खाए हैं।

हौसले देखिए हमारे भी,
आँधियों में दिये जलाए हैं।

मुस्कुरा कर भी देखिये 'देवी',
अश्क तो उम्र भर बहाए हैं।

◇◇◇

लबों पर गिले यूँ भी आते रहे हैं,
तुम्हारी जफ़ाओं को गाते रहे हैं।

कभी छाँव में भी बसेरा किया था,
कभी धूप में हम नहाते रहे हैं।

रहा आशियाँ दिल का वीरान लेकिन,
उमीदों की महफ़िल सजाते रहे हैं।

लिए आँख में कुछ उदासी के साए,
तिरे ग़म में पलकें जलाते रहे हैं।

ज़माने से 'देवी' न हमको मिला कुछ,
ज़माने से फिर भी निभाते रहे हैं।

◇◇◇

तारों का नूर लेकर ये रात ढल रही है,
दम तोड़ती हुई सी इक शम्अ जल रही है।

नींदों की ख़्वाहिशों में रातें गुज़ारती हूँ,
सपनों की आस अब तक दिल में ही पल रही है।

ऐसे न डूबते हम पहले जो थाम लेते,
मौजों की गोद में अब कश्ती संभल रही है।

तुम जब जुदा हुए तो सब कुछ उजड़ गया था,
तुम आ गए तो दुनिया करवट बदल रही है।

इस ज़िंदगी में रौनक़ कम तो नहीं है 'देवी',
बस इक तिरी कमी ही दिन रात खल रही है।

◇◇◇

अपने जवान हुस्न का सदक़ा उतार दे,
दर्शन दे एक बार मुक़द्दर सँवार दे।

जो खिल उठें गुलाब मिरे दिल के बाग़ में,
रब्बा, मेरे नसीब में ऐसी बहार दे।

अच्छा तो मेरे क़त्ल में मेरा ही हाथ था,
ये तुहमतें तमाम मिरे सर पे मार दे।

इक जामे-बेख़ुदी की है दरकार आजकल,
हर ग़म को भूल जाऊँ मैं, ऐसा ख़ुमार दे।

मोहलत ज़रा सी दे मुझे लौटूँ अतीत में,
दो चार पल के वास्ते दुनिया सँवार दे।

◇◇◇

बाक़ी न तेरी याद की परछाइयाँ रहीं,
बस मेरी ज़िंदगी में ये तन्हाइयाँ रहीं।

डोली तो मेरे ख़्वाब की उठ्ठी नहीं मगर,
यादों में गूँजती हुई शहनाइयाँ रहीं।

बचपन तो छोड़ आए थे, लेकिन हमारे साथ,
ता-उम्र खेलती हुई अमराइयाँ रहीं।

चाहत ख़ुलूस, प्यार के रिश्ते बदल गए,
जज़्बात में न आज वो गहराइयाँ रहीं।

अच्छे थे जो भी लोग वो बाक़ी नहीं रहे,
'देवी', जहाँ में अब कहाँ अच्छाइयाँ रहीं।

◇◇◇

सपने कभी आँखों में बसाए नहीं हमने,
बेकार के ये नाज़ उठाए नहीं हमने।

दौलत को तिरे दर्द की रक्खा सहेज कर,
मोती कभी पलकों से गिराए नहीं हमने।

आई जो तेरी याद तो लिखने लगी ग़ज़ल,
औरों को गीत रोके सुनाए नहीं हमने।

है सूखा पड़ा आज तो, कल आएगा सैलाब,
ख़ेमे किसी जगह भी लगाए नहीं हमने।

इतने फ़रेब खाए हैं 'देवी' बहार में,
अब के दरो-दीवार सजाए नहीं हमने।

◇◇◇

कैसे दावा करूँ मैं सच्ची हूँ,
झूठ की बस्तियों में रहती हूँ।

मेरी तारीफ़ वो भी करते हैं,
जिनकी नज़रों में रोज़ गिरती हूँ।

दुश्मनों का मलाल क्या कीजे,
दोस्तों के लिए तो अच्छी हूँ।

दिल्लगी इससे बढ़के क्या होगी,
दिलजलों की गली में रहती हूँ।

भर गया दिल हमारा अपनों से,
सुख से ग़ैरों के बीच रहती हूँ।

गागरों में जो भर चुके सागर,
प्यास उनके लबों की बनती हूँ।

ज़ीस्त 'देवी' है खेल शतरंजी,
बनके मोहरा मैं चाल चलती हूँ।

◇◇◇

झूठ सच के बयान में रक्खा,
बिक गया जो दुकान में रक्खा।

क्या निभाएगा प्यार वह जिसने,
ख़ुदपरस्ती को ध्यान में रक्खा।

ढूँढ़ते थे वजूद को अपने,
भूले हम, किस मकान में रक्खा।

जिसने भी मस्लहत से काम लिया,
उसने ख़ुद को अमान में रक्खा।

जो भी जैसा है ठीक ही तो है,
कुछ नहीं झूठी शान में रक्खा।

ज़िंदगी तो है बेवफ़ा 'देवी',
इसने मुझको गुमान में रक्खा।

◇◇◇

तू न था कोई और था फिर भी
याद का सिलसिला चला फिर भी।

शहर सारा है जानता फिर भी
राह इक बार पूछता फिर भी।

याद की क़ैद में परिंदा था
कर दिया है उसे रिहा फिर भी।

जिंदगी को बहुत सँभाला था
कुछ न कुछ टूटता रहा फिर भी।

गो परिंदा वो दिल का घायल था
सोच के पर लगा उड़ा फिर भी।

तोहमतें तू लगा मगर पहले
फ़ितरतों को समझ ज़रा फिर भी।

कर दिया है ख़ुदी से घर ख़ाली
क्यों न 'देवी' ख़ुदा रहा फिर भी।

◇◇◇

गर्दिशों ने बहुत सताया है
हर क़दम पर ही आज़माया है।

दफ़्न हैं राज़ कितने सीने में
हर्फ़ लब पर कभी न आया है।

मुझको हँस हँस के मेरे साकी ने
उम्र भर ज़हर ही पिलाया है।

ज़ोर मौजों का ख़ूब था लेकिन
कोई कश्ती निकाल लाया है।

मुस्कुराया है इस अदा से वो
जैसे ख़त का जवाब आया है।

बनके अंजान उसने फिर मेरे
दिल के तारों को झन-झनाया है।

मुझको ठहरा दिया कहाँ 'देवी'
सर पे छत है न कोई साया है।

◇◇◇

दर्द बनकर समा गया दिल में
कोई महमान आ गया दिल में।

चाहतें लेके कोई आया था
आग सी इक लगा गया दिल में।

झूठ में सच मिला दिया उसने
एक तूफ़ाँ उठा गया दिल में।

ख़ुशबुओं से बदन महक उठ्ठा
फूल ऐसे खिला गया दिल में।

मैं अकेली थी और अँधेरा था
जोत कोई जला गया दिल में।

◇◇◇

छीन लीं मुझसे मौसम ने आज़ादियाँ
रास फिर आ गईं मुझको तन्हाइयाँ।

बनके भँवरे चुराते रहे रंगो-बू
रंग है अपना कोई, न है आशियाँ।

दूसरा ताज कोई बनाएगा क्या
अब लहू मैं रही हैं कहाँ गर्मियाँ।

ख़ुद से हारा हुआ आज इंसान है
हौसलों में कहाँ अब हैं अँगड़ाइयाँ।

आज जो ज़हमतों का मिला है सिला
बावफा वो निभाती हैं दुश्वारियाँ।

पहले अपने गरेबान में देख ले
फिर उठा 'देवी' औरों पे तू उँगलियाँ।

◇◇◇

चराग़ों ने अपने ही घर को जलाया
निगाहे-जहाँ में तमाशा बनाया।

किसी को भला कैसे हम आज़माते
मुक़द्दर ने हमको बहुत आज़माया।

मेरे साथ जलती रही शम्अ कल जो
अँधेरा उसी रौशनी का है साया।

रही राहतों की बड़ी मुंतज़िर मैं
मगर चैन दुनिया में हर्गिज़ न पाया।

सँभल जाओ अब भी समय है ऐ 'देवी'
क़यामत का अब वक़्त नज़दीक आया।

◇◇◇

हिज्र में उसके जल रहे जैसे
प्राण तन से निकल रहे जैसे।

जो भटकते रहे जवानी में
वो क़दम अब सँभल रहे जैसे।

मौसमों की तरह ये इन्साँ भी
फ़ितरत अपनी बदल रहे जैसे।

दर्द मुझ से नहीं है इतनी दूर
पास में ही टहल रहे जैसे।

आईना रोज यूँ बदलते वो
अपने चेहरे बदल रहे जैसे।

साँस लेते हैं इस तरह 'देवी'
सिसकियों में हों पल रहे जैसे।

◇◇◇

तेरे क़दमों में सर झुकाया है
तुझको अपना ख़ुदा बनाया है।

जिसकी ख़ातिर ख़ता हुई हमसे
वो ही इल्ज़ाम देने आया है।

ख़ुद की नज़रों से गिर गए हैं जो
हमने बढ़कर उन्हें उठाया है।

हौसला है बुलंद कुछ इतना
हमने तूफाँ में घर बनाया है।

हम को पूरा यकीन था जिस पर
तोड़कर उसने ही रुलाया है।

उसने धोका दिया हमें 'देवी'
राज़े-दिल जिसको भी बताया है।

◇◇◇

दिल को हम कब उदास करते हैं
आज भी उनकी आस करते हैं।

हमको ढूँढों नहीं मकानों में,
हम दिलों में निवास करते हैं।

पहले ख़ुद ही उदास रहते थे,
अब वो सबको उदास करते हैं।

चढ़के काँधों पे हो गए ऊँचे,
इस तरह भी विकास करते हैं।

इत्तिफ़ाकन निगाह उट्ठी थी,
लोग क्या-क्या क़यास करते हैं।

◇◇◇

ख़यालो-ख़्वाब में ही महफ़िलें सजाता है,
और उसके बाद उदासी में डूब जाता है।

वो चाहता है के नज़्दीक रहूँ मैं उसके,
क़रीब जाऊँ तो फिर फ़ासले बढ़ाता है।

कुछ ऐसे भाए हैं रस्तों के पेचोख़म उसको,
क़रीब जाके भी मंज़िल से लौट आता है।

किसी ज़ुबान के शब्दों से उसको नफ़रत है,
किसी के धर्म पे उँगली भी वो उठाता है।

वो रूठ जाता है यूँ भी कभी-कभी मुझसे,
कभी-कभी तो मिरे नाज़ भी उठाता है।

◇◇◇

हमने चाहा था क्या और क्या दे गई,
ग़म का पैग़ाम बादे—सबा दे गई।

मुस्कराहट को होटों से दाबे रखा,
मेरी नीची नज़र ही दग़ा दे गई।

मौत से कम नहीं तेरी चाहत के जो,
जीते रहने की हमको सज़ा दे गई।

आके इक मौज हल्की सी साहिल पे आज,
आने वाला है तूफ़ाँ पता दे गई।

हम झुलसते रहे हिज्र की आग में,
ज़िन्दगी मुझको 'देवी' सज़ा दे गई।

◇◇◇

चोट ताज़ा कभी जो खाते हैं
ज़ख्मे-दिल और मुस्कराते हैं।

मयकशी से ग़रज नहीं हमको
तेरी आँखों में डूब जाते हैं।

जिनको वीरानियाँ ही रास आईं
कब नई बस्तियाँ बसाते हैं।

शाम होते ही तेरी यादों के
दीप आँखों में झिलमिलाते हैं।

कुछ तो गुस्ताख़ियों की मुहलत दो
अपनी पलकों को हम झुकाते हैं।

तुम तो तूफ़ाँ से बच गईं 'देवी'
लोग साहिल पे डूब जाते हैं।

◇◇◇

वो अदा प्यार भरी याद मुझे है अब तक,
बात बरसों की मगर कल की लगे है अब तक।

हम चमन में ही बसे थे वो महक पाने को
ख़ार नश्तर की तरह दिल में चुभे है अब तक।

जा चुका कब का ये दिल तोड़ के जाने वाला
आँखों में अश्कों का इक दरिया बहे है अब तक।

आशियाँ जलके हुआ राख़, ज़माना गुज़रा
और रह रह के धुआँ उसका उठे है अब तक।

क्या ख़बर वक़्त ने कब घाव दिए थे 'देवी'
वक़्त गुज़रा है मगर ख़ून बहे है अब तक

◇◇◇

ठहराव ज़िंदगी में दोबारा नहीं मिला
जिसकी तलाश थी वो किनारा नहीं मिला।

हर्गिज़ उतारते न समंदर में कश्तियाँ
तूफ़ान आया जब भी इशारा नहीं मिला।

हमने तो ख़ुद को आप सँभाला है आज तक
अच्छा हुआ किसी का सहारा नहीं मिला।

बदनामियाँ घरों में दबे पाँव आ गईं
शोहरत को घर कभी भी, हमारा नहीं मिला।

ख़ुशबू हवा और धूप की परछाइयाँ मिलीं
रौशन करे जो शाम, सितारा नहीं मिला।

खामोशियाँ भी दर्द से 'देवी' पुकारतीं
हम-सा कोई नसीब का मारा नहीं मिला।

◇◇◇

जाने क्या कुछ हुई ख़ता मुझसे
रूठा वो वे सबब न था मुझसे।

जिसको हासिल न कुछ हुआ मुझसे
मौन का अर्थ पूछता मुझसे।

लोग क्या जाने जानने आए
नाता जिनका न था जुड़ा मुझसे।

जिसने रक्खा था क़ैद मैं मुझको
ख़ुद रिहाई था चाहता मुझसे

ना-शनासों की बस्तियों में, कब
किसने रक्खा है राब्ता मुझसे।

सिलसिला राहतों का टूट गया
दिल की धड़कन हुई ख़फ़ा मुझसे।

◇◇◇

अँधेरी गली में मेरा घर रहा है
जहाँ तेल-बाती बिना इक दिया है।

जो रौशन मिरी आरज़ू का दिया है
मिरे साथ वो मेरी माँ की दुआ है।

अजब है उसी के तले है अँधेरा
दिया हर तरफ़ रौशनी बाँटता है।

यहाँ मैं भी मेहमान हूँ और तू भी
यहाँ तेरा क्या है, यहाँ मेरा क्या है

खुली आँख में ख़्वाहिशों का समुंदर
न अंजाम जिनका कोई जानता है।

जहाँ देख पाई न अपनी ख़ुदी मैं
न जाने वहीं मेरा सर क्यों झुका है

तुझे वो कहाँ 'देवी' बाहर मिलेगा
धड़कते हुए दिल के अंदर ख़ुदा है।

◇◇◇

बड़ा जहान है इसमें, ये सर छुपाने दो
करम ख़ुदा का है सब पर, वो आज़माने दो

जो दिल के तार न छेड़े थे हमने बरसों से
उन्हें तो आज अभी छेड़ कर बजाने दो।

ख़फ़ा न तुम हो किसी से भी देखकर काँटे
कि फूल कहता है जो कुछ, उसे बताने दो।

ख़फ़ा हुई है ख़ुशी इस क़दर भी क्यों हमसे
ग़मों का जश्ने-मुबारक हमें मनाने दो।

उदासियों को छुपाओ न दिल में तुम 'देवी'
कभी लबों को भी कुछ देर मुस्कराने दो

◇◇◇

ख़ता अब बनी है सज़ा का फ़साना
बताऊँ तुम्हें क्या है दिल का लगाना।

हवा में न जाने ये कैसा नशा है
पिए बिन ही झूमे है सारा ज़माना।

यहाँ रोज सजती है ख़ुशियों की महफ़िल
मचलता है लब पर ख़ुशी का तराना

सदा घूमते हैं सरे आम ख़तरे
बहुत ही है दुश्वार ख़ुद को बचाना।

करें कैसे अपने पराए की बातें
दिलों ने अगर दिल से रिश्ता न माना।

◇◇◇

बहता रहा जो दर्द का सैलाब था न कम
आँखें भी रो रही हैं ये अश्आर भी हैं नम।

जिस शाख पर खड़ा था वो, उसको ही काटता,
नादाँ न जाने ख़ुद पे ही करता था क्यों सितम

रिश्तों के नाम जो भी लिखे रेगज़ार पर
कुछ लेके आँधियाँ गईं, कुछ तोड़ते हैं दम।

मुर्झा गई बहार में वो, बन सकी न फूल,
मासूम सी कली पे ये कितना बड़ा सितम।

रोते हुए से जश्न मनाते हैं लोग क्यों,
चेहरे जो उनके देखे तो, असली लगे वो कम।

◇◇◇

बुझे दीप को जो जलाती रही है
यही रोशनी है, यही रोशनी है।

जो बेलौस अपने ख़ज़ाने लुटा दे
यही सादगी है, यही सादगी है।

रहे दूर सुख में, मगर पास दुख में
यही दोस्ती है, यही दोस्ती है।

पिया हो मगर प्यास फिर भी हो बाक़ी
यही तिश्नगी है, यही तिश्नगी है।

बिना कुछ कहे बात आए समझ में
यही आशिक़ी है, यही आशिक़ी है।

कभी शांति में ख़ुश, कभी शोर में ख़ुश
यही बेदिली है, यही बेदिली है।

जो चाहा था वो सब न कर पाई 'देवी'
यही बेबसी है, यही बेबसी है।

◇◇◇

कोई षड्यंत्र रच रहा है क्या
जन्मदाता बना हुआ है क्या।

राहगीरों से मिलके राहों पर
राह को घर समझ रहा है क्या।

रात दिन किस ख़ुमार में है तू
तुझ को अपना भी कुछ पता है क्या।

सुर्ख़ियाँ ज़ुल्म की हैं चेहरे पर
इस पे ख़ुश होने में मज़ा है क्या।

हो कोई दुष्ट तुझको क्या 'देवी'
छोड़ इस सोच में रखा है क्या।

◇◇◇

तर्क कर के दोस्ती फिरता है क्यों
बनके आख़िर अजनबी फिरता है क्यों।

चल वहाँ होगी जहाँ शामे-ग़ज़ल
साथ लेकर बेदिली फिरता है क्यों।

बैठ आपस में ज़रा बातें करें
ओढ़ कर तू ख़ामुशी फिरता है क्यों।

जब नहीं दिल में ख़ुशी तो किस लिए
लेके होटों पर हँसी फिरता है क्यों।

चाहतों के फूल, रिश्तों की महक
लेके ये दीवानगी फिरता है क्यों।

दाग़ दामन के ज़रा तू धो तो ले
इतनी लेकर गंदगी फिरता है क्यों।

है हक़ीक़त से सभी का वास्ता
करके उससे बेरुख़ी फिरता है क्यों।

◇◇◇

कितने आफ़ात से लड़ी हूँ मैं
तब तिरे दर पे आ खड़ी हूँ मैं।

वो किसी से वफ़ा नहीं करता
कहता है बेवफ़ा बड़ी हूँ मैं।

आस्माँ पर हैं चाँद तारे सब
इस ज़मीं पर फ़कत पड़ी हूँ मैं।

क़द में बेशक़ बड़ा है तू मुझसे
उम्र में चार दिन बड़ी हूँ मैं।

मैं तो नायाब इक नगीना हूँ
अपने ही साँस में जड़ी हूँ मैं।

नाम है ज़िंदगी मगर 'देवी'
अस्ल में मौत की कड़ी हूँ मैं।

◇◇◇

यूँ उसकी बेवफाई का मुझको गिला न था
इक मैं ही तो नहीं जिसे सब कुछ मिला न था।

उठता चला गया मिरी सोचों का कारवाँ
आकाश की तरफ कभी, वो यूँ उड़ा न था।

माहौल था वही सदा, फ़ितरत भी थी वही
मजबूर आदतों से था, आदम बुरा न था।

जिस दर्द को छुपा रखा मुस्कान के तले
बरसों में एक बार भी कम तो हुआ न था।

ढोते रहे हैं बोझ सदा तेरा ज़िंदगी
जीने में लुत्फ़ क्यों कोई बाक़ी बचा न था।

कितने नकाब ओढ़ के 'देवी' दिए फ़रेब
जो बेनकाब कर सके वो आईना न था।

◇◇◇

रिश्ता तो सब ही जताते हैं
पर कुछ ही साथ निभाते हैं।

दुख दर्द हैं ऐसे मेहमाँ जो
आहट के बिन आ जाते हैं

गर्दिश में सितारे हैं जिनके
वो दिन में भी घबराते हैं।

विश्वास की दौलत वालों को
रातों के अँधेरे भाते हैं।

ज़ंजीर में यादों की 'देवी'
हम ख़ुद को जकड़ते जाते है।

◇◇◇

बहारों का आया है मौसम सुहाना
नए साज़ पर कोई छेड़ो तराना।

ये कलियाँ, ये गुंचे ये रंग और ख़ुशबू
सदा ही महकता रहे आशियाना।

हवा का तरन्नुम बिखेरे है जादू
कोई गीत तुम भी सुनाओ पुराना।

चलो दोस्ती की नई रस्म डालें
हमें याद रक्खेगा सदियों ज़माना।

ख़ुशी बाँटने से बढ़ेगी ज़ियादा
नफ़े का है सौदा इसे मत गवाना।

मैं 'देवी' ख़ुदा से दुआ माँगती हूँ
बचाना, मुझे चश्मे-बद से बचाना।

◇◇◇

राज़ दिल में छिपाए है वो किस क़दर
सारी ख़ामोशियों की हदें पार कर

यूँ तो जीते रहे रोज़ मर मर के हम
कर रहे हैं अभी एक गिनती मगर।

मुस्कुराता था वो ऐसे अंदाज से
जैसे ज़ख़्मों से उसका भरा हो जिगर।

ज़िंदगी ने मुझे है बहुत जी लिया
सीख पाई न उससे कभी ये हुनर।

कितने रौशन सभी के हैं चेहरे यहाँ
मन में उनके बसा है अँधेरा मगर।

दीन ईमान दुनिया में जाने कहाँ
पाँव इक है इधर, दूसरा है उधर।

तीर शब्दों के ऐसे निकलते रहे
छेदते ही रहे जो हमारा जिगर।

ज़िंदगी को कभी भी न समझे थे हम
ख़्वाब थी, ख़्वाब ही में गई वो गुज़र।

डर की आहट न 'देवी' कभी सुन सकी
सामने मौत आई तो देखा था डर।

◇◇◇

नहीं उसने हर्गिज रज़ा रब की पाई
न जिसने कभी हक की रोटी कमाई।

रहे खटखटाते जो दर हम दया के
दुआ बनके उजली किरण मिलने आई।

मिली है वहाँ उसको मंजिल-मुबारक
जहाँ शम्अ हिम्मत की उसने जलाई।

ख़ुदी को मिटाकर ख़ुदा को है पाना
हमारी समझ में तो ये बात आई।

रहा जागता जो भी सोते में 'देवी'
मुक़द्दर की देता नहीं वो दुहाई।

◇◇◇

दीवारो-दर तो ठीक थे, बीमार दिल वहाँ
टूटे हुए उसूल थे, जिनका रहा गुमाँ।

दीवारो-दर को हो न हो अहसास भी अगर
दिल नाम का जो घर मेरा, यादें बसी वहाँ।

नश्तर चुभो के शब्द के, गहरे किए हैं ज़ख्म
जो दे शफ़ा-सुकून भी, मरहम वो है कहाँ।

झोंके से आके झाँकती खुशियाँ कभी-कभी
बसती नहीं है जाने क्यों बनके वो मेहरबाँ।

ख़ामोश थी ज़ुबाँ मगर आँखें न चुप रहीं
नादाँ है वो न समझे इशारों की जो ज़ुबाँ।

इन गर्दिशों के दौर से 'देवी' न बच सकें
जब तक ज़मीं पे हम हैं और ऊपर है आस्माँ।

◇◇◇

हक़ीक़त में हमदर्द है वो हमारा
बुरे वक़्त में आके दे जो सहारा।

कभी साहिलों से भी उठते हैं तूफाँ
कभी मौज़े-तूफ़ाँ में पाया किनारा।

दबी चीख़ जब भी सुनी हसरतों की
कभी आँख रोई, कभी दिल हमारा।

ये किस मोड़ पर ज़िंदगी लेके आई
ख़ुशी है गवारा, न ग़म है गवारा।

कभी बददुआओं ने दी ज़िंदगानी
कभी तो तुम्हारी दुआओं ने मारा।

मिरी ज़िंदगी में बहार आ रही है
तुम्हारे तबस्सुम ने शायद पुकारा।

मुझे डर है 'देवी' तो बस दोस्तों से
मुझे दुश्मनों ने दिया है सहारा।

◇◇◇

सोच को मेरी नई वो इक रवानी दे गया
मेरे शब्दों को महकती ख़ुशबयानी दे गया।

रिश्तों के बाज़ार में जो बेचकर अपना ज़मीर
तोड़कर मेरा भरोसा बदगुमानी दे गया।

सौदेबाज़ी करके ख़ुद वो अपने ही ईमान की
शहर के सौदागरों को बेईमानी दे गया।

जाने क्या क्या बह गया था आँसुओं की बाढ़ में
नाख़ुदा घबराके उसमें और पानी दे गया।

साथ अपने लेके आया ताज़गी चारों तरफ़
ख़ुशबू फैलाकर चमन को वो जवानी दे गया।

आशनाई दे सके ऐसा बशर मिलता नहीं
बरसों पहले जो मिला वो इक निशानी दे गया।

चल दिया पहचान वो अपनी छिपाकर एक दिन
मेरे अहसासों को लेकिन इक ज़ुबानी दे गया।

एक शाइर आके इक दिन पत्थरों के शहर में
मेरी ख़ामोशी को 'देवी' तर्जुमानी दे गया।

◇◇◇

सोच की चट्टान पर बैठी रही
जाल मख़्मल का वहीं बुनती रही

कहने के क़ाबिल न थी उसकी जुबाँ
ख़ामुशी की गूँज मैं सुनती रही।

हार मानी थी न कल तक आज फिर
हौसले लेकर न क्यों चलती रही।

कुछ बहारों से नहीं है वास्ता
मैं खिज़ाओं में सदा पलती रही।

जिसने तूफ़ाँ से बचाया था मुझे
सामने उसके सदा झुकती रही।

◇◇◇

है गर्दिश में क़िस्मत का अब भी सितारा
कभी तो डुबोया कभी फिर उभारा।

दबे पाँव तूफ़ान आए हैं कैसे
न कोई ख़बर थी न कोई इशारा।

अचानक ही झड़ने लगे फूल पत्ते
अचानक बदलने लगा है नज़ारा।

यहीं छोड़कर सब चले जाएँगे हम
रहेगा कहीं भी न कुछ भी हमारा।

मुझे मेरे रब का सहारा मिला है
नहीं चाहिए अब किसी का सहारा।

◇◇◇

ज़िंदगी है ये, ऐ बेख़बर
मुख़्तसर, मुख़्तसर, मुख़्तसर।

ज़ायका तो लिया उम्र भर
ज़हर को समझे अमृत मगर।

बनके बेख़ौफ़ चलता है क्यों
मौत रखती है तुझपर नज़र।

बस उन्हें देखते रह गए
हमसे खुशियाँ चलीं रूठकर।

रक़्स करती थीं ख़ुशियाँ अभी,
ग़म उन्हें ले गया लूटकर।

कैसे परवाज़ 'देवी' करे
नोचे सैयाद ने उसके पर।

◇◇◇

यूँ मिलके वो गया है कि मेहमान था कोई
उसका वो प्यार मुझपे इक अहसान था कोई।

वो राह में मिला भी तो कुछ इस तरह मिला
जैसे के अपना था न वो, अनजान था कोई।

घुट घुट के मर रही थी कोई दिल की आरज़ू
जो मरके जी रहा था वो अरमान था कोई।

नज़रें झुकीं तो झुकके ज़मीं पर ही रह गईं
नज़रें उठाना उसका न आसान था कोई।

था दिल में दर्द, चेहरा था मुस्कान से सजा
जो सह रहा था दर्द वो इन्सान था कोई।

उसके करम से प्यार-भरा, दिल मुझे मिला
'देवी' वो दिल के रूप में वरदान था कोई।

◇◇◇

बददुआओं का है ये असर
हर दुआ हो गई बेअसर।

ज़ख्म अब तक हरे हैं मिरे
सूखकर रह गए क्यों शजर।

यूँ न उलझो किसी से यहाँ
फ़ितरती शहर का है बशर।

राह तेरी मिरी एक थी
क्यों न बन पाया तू हमसफ़र।

वो मनाने तो आया मुझे
रूठ कर ख़ुद गया है मगर।

चाहती हूँ मैं 'देवी' तुझे
सच कहूँ किस क़दर टूटकर।

◇◇◇

शबनमी होंट ने छुआ जैसे
कान में कुछ कहे हवा जैसे।

लेके आँचल उड़ी हवा जैसे
सैर को निकली हो सबा जैसे।

उससे कुछ इस तरह हुआ मिलना
मिलके कोई बिछड़ रहा जैसे।

लोग कहकर मुकर भी जाते हैं
आँख सच का है आईना जैसे।

दो किनारों के बीच की दूरी
है गवारा ये फासला जैसे।

शहर में बम फटा था कल लेकिन
दिल अभी तक डरा हुआ जैसे।

देखकर आदमी की करतूतें
आती मुझको रही हया जैसे।

जिस सहारे में पुख़्तगी ढूँढी
था वही रेत पर खड़ा जैसे।

◇◇◇

दिल अकेला कहाँ रहा होगा
फ़िक्र का साथ क़ाफ़िला होगा।

याद की बज़्म में जो रहता हूँ
कुछ तो उनसे भी वास्ता होगा।

साथ सूरज के चाँद तारे हों
रात-दिन में न फ़ासला होगा।

कुछ करिश्मे अजीब अनदेखे
कुछ न कुछ उन का क़ायदा होगा।

उम्र भर का सफ़र है जीवन ये
'मौत' मंज़िल है, सामना होगा।

साथ अपना निभा सकें कैसे
ख़ुद से जब तक न राबता होगा।

◇◇◇

मजबूरियों में भीगता, हर आदमी यहाँ
सौदा करे ज़मीर का, हर आदमी यहाँ।

इक दूसरे के कर्ज़ में डूबे हुए हैं सब
इक दूसरे से डर रहा, हर आदमी यहाँ।

कहते हैं जिसको शाइरी शब्दों का खेल है
शाइर मगर छुपा हुआ, हर आदमी यहाँ।

सब बुझ गए चराग़, उजाले समेट कर
इक ढेर राख का बचा, हर आदमी यहाँ।

शतरंज की बिसात पे 'देवी' है ज़िंदगी
मोहरा ही बनके रह गया, हर आदमी यहाँ।

◇◇◇

वो नींद में आना भूल गए
हम ख़्वाब सजाना भूल गए।

दरिया तक दिल को ले आए
पर प्यास बुझाना भूल गए।

कुछ ऐसे उलझे ख़ारों में
दामन को बचाना भूल गए।

कुछ राह में ऐसे मोड़ मिले,
घर वापस आना भूल गए।

दीवार कुरेदी यादों की
और ज़ख्म दिखाना भूल गए।

कसमें भी हमें कुछ याद नहीं
रस्में भी निभाना भूल गए।

पलभर में बदलता है मंज़र
हम याद दिलाना भूल गए।

इस जीने की उलझन में 'देवी'
बचपन का ज़माना भूल गए।

◇◇◇

इक नशा सा तो बेख़ुदी में हो
हुस्न ऐसा भी सादगी में हो।

दे सके जो ख़ुलूस का साया
ऐसी ख़ूबी तो आदमी में हो।

शक की बुनियाद पर महल कैसा
कुछ तो ईमान दोस्ती में हो।

ख़ुश्क कर दे जो दुख के सागर को
ऐसा कुछ तो असर ख़ुशी में हो।

ख़ुद-ब-ख़ुद आ मिले ख़ुदा मुझसे
कुछ तो अहसास बंदगी में हो।

अपनी मंज़िल को पा नहीं सकता
वो जो गुमराह रौशनी में हो।

सारे मतलब-परस्त हैं 'देवी'
कुछ मुरव्वत भी तो किसी में हो।

◇◇◇

मिट्टी का मेरा घर अभी पूरा बना नहीं
है हमसफ़र ग़रीब मेरा, बेवफ़ा नहीं।

माना के मेरे दिल में ज़रा भी दया नहीं
फिर भी किसी के बारे में कुछ भी कहा नहीं।

आँगन में बीज बोए कल, अब पेड़ हैं उगे
शाख़ों पे कोई एक भी पत्ता हरा नहीं।

विश्वास कर सको तो करो वरना छोड़ दो
इस दम समय बुरा है मिरा, मैं बुरा नहीं।

रस्मों के रिश्ते और हैं, जज़्बात के हैं और
मैंने ज़बाँ से नाम किसी का लिया नहीं।

अच्छी बुरी हैं फ़ितरतें, टकराव लाज़मी
शतरंज़ की बिसात पे मोहरा बना नहीं।

'देवी' हज़ारों मर्तबा जाँ पर बनी मगर
ज़िंदा अहम् सदा से है, अब तक मरा नहीं।

◇◇◇

वैसे तो अपने बीच नहीं है कोई ख़ुदा
लेकिन ख़ुदी ने दोनों में रक्खा है फ़ासला।

दीवार की तरह है ये रिश्तों में इक दरार
डर बनके दिल में पलती है इंसान की ख़ता।

ये ज्वार भाटे आते ही रहते हैं ज़ीस्त में
हर रोज़ आके जाते हैं देकर हमें दग़ा।

तेरे ही ऐतबार में डूबी हुई हूँ मैं
पर अब ये ऐतबार ही मुझको न दे डुबा।

भँवरों के इंतज़ार में मुरझा गए सुमन
ऐ मौत, आ मुझे भी तू अपने गले लगा।

◇◇◇

गुफ़्तगू हमसे वो करे जैसे
ख़ामुशी के हैं लब खुले जैसे।

तुझसे मिलने की ये सज़ा पाई
चाँदनी-धूप सी लगे जैसे।

तोड़ता दम है जब भी परवाना
शम्अ की लौ भी रो पड़े जैसे।

यूँ ख़यालों में पुख़्तगी आई
बीज से पेड़ बन गए जैसे।

ये तो नादानी मेरे दिल ने की
और सज़ा मिल गई मुझे जैसे।

याद 'देवी' को उनकी यूँ आई
ज़ख़्म ताज़ा कोई लगे जैसे।

◇◇◇

राहत न मेरा साथ निभाए तो क्या करूँ
घर, धूल गर्दिशों की सजाए तो क्या करूँ।

जज़्बात मेरे दिल के न कागज़ पे आ सके
वो दास्ताँ कुछ और सुनाए तो क्या करूँ।

क्यूँ दिल से कर रही हैं यूँ खिलवाड़ हसरतें
दामन को आग घर की जलाए तो क्या करूँ।

मैं ख़्वाहिशों की क़ैद में रहती रही सदा
मन को रिहाई फिर भी न भाए तो क्या करूँ।

किसने कहा कि दिल ये मेरा बे-ज़ुबान है
तेरी समझ में बात न आए तो क्या करूँ।

अंतर में मेरे राम बसे हैं, रहीम भी
क़ाबू में मेरा मन जो न आए तो क्या करूँ।

'देवी' सफ़र में यूँ भी अकेली रही हूँ मैं
उल्फ़त किसी की रास न आए तो क्या करूँ।

◇◇◇

छोड़ आसानियाँ गईं जब से
साथ दुश्वारियाँ रहीं तब से।

इतनी गहरी घुटन मिरे मन की
हर्फ़ निकला न एक भी लब से।

रातभर एक पल न सो पाई
सुबह का इंतज़ार था शब से।

जो मेरी साँस में समाया था
मैं उसे माँगती रही रब से।

आह बनके टपक पड़े तारे
जिनका रिश्ता रहा नहीं शब से।

ग़ालिबो-मीर कितने आए गए
शेर अब वो नहीं रहे तब से।

इतना ईमान तुझपे है 'देवी'
तोड़ बैठी हूँ वास्ता सबसे।

◇◇◇

शम्अ की लौ पे जल रहा है वो
मौत से रू-ब-रू हुआ है वा।

इतना बालिग़-नज़र हुआ है वो
इल्म नीलाम कर रहा है वो।

है उसूलों की कशमकश फिर भी
काले बाज़ार में खड़ा है वो।

वक्त भी ले रहा है अँगड़ाई
करवटें ज्यूँ बदल रहा है वो।

वो तो 'देवी' है दिल की नादानी
जुर्म मुझसे कहाँ हुआ है वो।

◇◇◇

ज़ख़्म दिल का अब भरा तो चाहिए,
बा-असर उसकी दवा तो चाहिये।

खींच ले मुझको जो वो अपनी तरफ़
शोख़-सी कोई अदा तो चाहिए।

काम अच्छा या बुरा, जो भी हुआ
उसका मिलना कुछ सिला तो चाहिए।

जलते बुझते जुगनुओं की ही सही
ज़ुल्मतों में कुछ ज़िया तो चाहिए।

मैं मना तो लूँ उसे 'देवी', मगर
रूठकर बैठा हुआ तो चाहिए।

◇◇◇

शहर अरमानों का जले अब तो
आग पानी में भी लगे अब तो।

जान पहचान किसकी है किससे
हैं नकाबों में सब छिपे अब तो।

चाँदनी से सजे थे ख़्वाब मिरे
धूप में जलते देखिए अब तो।

ऐब मेरे गिना दिये जिसने
दोस्त बनकर मिला गले अब तो।

मन की कड़वाहटों को पी न सकी
हो रही है घुटन मुझे अब तो।

वहशी आँखों ने ऐसा क्या देखा
ख़ुद ब ख़ुद होंट है सिले अब तो।

'देवी' दिल के हज़ार टुकड़े हैं
हम हज़ारों में बंट गए अब तो।

◇◇◇

उसे इश्क़ क्या है पता नहीं
कभी शम्अ पर वो जला नहीं।

वो जो हार कर भी है जीतता
उसे कहते हैं वो जुआ नहीं।

यूँ तो देखने में वो सख़्त है
वैसे आदमी वो बुरा नहीं।

न बुझा सकेंगी ये आँधियाँ
ये चराग़े-दिल है दिया नहीं।

मिरे हाथ आईं बुराइयाँ
मिरी नेकियों को गिला नहीं।

कोई अक्स दिल में उतार लूँ
मुझे आइना वो मिला नहीं।

जो मिटा दे 'देवी' उदासियाँ
कभी साज़े-दिल यूँ बजा नहीं।

◇◇◇

ख़ूबसूरत दूकान है तेरी
हर नुमाइश में जान है तेरी।

यूँ तो गूँगी ज़बान है तेरी
हर तमन्ना जवान है तेरी।

कुछ तो काला है दाल में शायद
लड़खड़ाती ज़ुबान है तेरी।

पेट टुकड़ों पे पल ही जाता है
अब ज़रूरत मकान है तेरी।

चीर कर तीर ने रखा दिल को
टेढ़ी चितवन कमान है तेरी।

फूल सा दिल लगे है कुम्हलाने
आग जैसी ज़बान है तेरी।

सारा आकाश नाप लेता है
कितनी ऊँची उड़ान है तेरी।

तुझको पढ़ते रहे, तभी जाना
'देवी' दिलकश ज़ुबान है तेरी।

◇◇◇

अपने मक्सद से हटाकर तू नज़र
क्यों भटकता फिर रहा है दरबदर।

चार दिन की ज़िंदगी हँसकर गुज़ार
इस हक़ीक़त से न रहना बेख़बर।

बात करने के कई अंदाज़ हैं
दिल पे लेकिन सब नहीं करते असर।

हम रहे अपनों में जब ता-ज़िंदगी
अब अकेले में नहीं होती बसर।

मीठी बातें क्यों भली लगने लगीं
ज़हर भी मुझको लगा है बेअसर।

नक्शे-पा 'देवी' मिलें जो राह में
मुश्किलें आसान आएँगी नज़र।

◇◇◇

फिर खुला मैंने दिल का दर रक्खा,
ख़्वाहिशों से सजाके घर रक्खा।

मैं निगेहबाँ बनी थी औरों की,
ज़िंदगानी को दाँव पर रक्खा।

छलनी छलनी किया है मेरा दिल,
मुझको उसने निशान पर रक्खा।

कुछ कहा और कुछ न कह पाए,
ज़ब्त ख़ुद पर यूँ उम्र भर रक्खा।

सोचना छोड़ अब तो ऐ 'देवी',
फ़ैसला जब अवाम पर रक्खा।

◇◇◇

वफ़ाओं पे मेरी जफ़ा छा गई,
तबीयत मुहब्बत से उकता गई।

करेगा न रोटी तलब पेट अब,
के ग़ुरबत मिरी भूख को खा गई।

ग़ज़ब है मिलीं मुख्तलिफ़ फ़ितरतें,
मुहब्बत गुलो-ख़ार को भा गई।

पिलाती रही ज़हर के जाम जो,
वही ज़िंदगी मुझको रास आ गई।

छिपाना तो चाहा था 'देवी' बहुत,
हक़ीक़त मगर सामने आ गई।

◇◇◇

छू गई मुझको ये हवा जैसे,
फूल को होंठ ने छुआ जैसे।

कोई शोला लपक गया जैसे,
दिल में मेरे धुआँ उठा जैसे।

मैं भरे से जहाँ में तन्हा हूँ,
हाँ! सितारों में चाँद था जैसे।

मैं उसे तो कभी न जी पाई,
ज़िंदगी ने मुझे जिया जैसे।

हल न कर पाई 'देवी' दुश्वारी,
ले गया कोई हौसला जैसे।

◇◇◇

किस किस से बचाऊँ अपना सर
जब हाथ में हैं सबके पत्थर।

जो बात सलीक़े से कह दे
पहचान बने उसका ये हुनर।

दुनिया की सराय के मेहमाँ हम
क्यों रोज़ हैं कहते मेरा घर।

बेख़ौफ़ रहे मुम्ताज़ वहाँ
जो ताज को समझे अपना घर।

नाक़ाबिल तख़्तों का राजा
क़ुदरत की नवाजिश है उसपर।

क्या हाल सुनाते हम उनको
जो हाल से अपने हैं बेख़बर।

पाने की तमन्ना कुछ भी नहीं
सजदे में झुका जब 'देवी' सर।

◇◇◇

ज़िंदगी फ़ितरतें यूँ निभाती रही,
ज्यों ज़मीं आसमाँ को मिलाती रही।

दुख का विष जाम में वो पिलाती रही,
ज़िंदगी अब वही मुझको भाती रही।

नफ़रतों पर बने प्यार के आशियाँ,
मेरी उल्फ़त सदा धोका खाती रही।

अपनी पलकों पे सपने सजाए थे जो,
आँसुओं से उन्हें मैं मिटाती रही।

फिक्र क्या, बहर क्या, क्या गज़ल, गीत क्या,
मैं तो शब्दों के मोती सजाती रही।

वह सुखों का जो पन्ना मुक़द्दर में था,
बेरुख़ी से हवा वह उड़ाती रही।

◇◇◇

बिजलियाँ यूँ गिरीं उधर जैसे,
उजड़ा अरमान का शजर जैसे।

दिन को लगता था रात ने लूटा,
ऐन हैरत में था क़मर जैसे।

ख़वाब पलकों पे जो सजाए कल,
आज टूटे, लगी नज़र जैसे।

तेरी यादों के साए थे शीतल,
हो गई धूप बेअसर जैसे।

दिल्लगी दिल से किसने की है यूँ,
ज़िंदगानी गई ठहर जैसे।

हमको ज़िंदा न तू समझ 'देवी',
दम निकलता है हर पहर जैसे।

◇◇◇

सुनामी की ज़द में रही ज़िंदगानी,
बहाती रहीं अश्क आँखें दिवानी।

हुई धुँधली शक्लें ख़ुद अपनी नज़र में,
हुई ख़त्म जैसे सुहानी कहानी।

भयानक वो मंज़र, वो खूँखार लहरें,
था जब ख़ून का प्यासा बारिश का पानी।

बुने ख़्वाब, और कितने अरमाँ सजाए,
सभी बह गए आँख से बन के पानी।

दबी ख़ौफ़ से चीख सीने के अंदर,
जो मोजों की देखी भयानक रवानी।

कई बह गये 'देवी' सपने सुहाने,
वो बारिश थी या आफ़ते-नागहानी।

◇◇◇

कैसी हवा चली है मौसम बदल रहे हैं,
सरसब्ज़ पेड़ जिनके साए में जल रहे हैं।

वादा किया था हमसे, हर मोड़ पर मिलेंगे,
रुस्वाइयों के डर से अब रुख़ बदल रहे हैं।

चाहत, वफा, मुहब्बत की हो रही तिजारत,
रिश्ते तमाम आख़िर सिक्कों में ढल रहे हैं।

शादी की महफ़िलें हों या जन्म दिन किसी का,
सब के ख़ुशी से दिल के अरमाँ निकल रहे हैं।

शहरों की भीड़ में हम तन्हा खड़े हैं 'देवी',
बेचेहरा लोग सारे ख़ुद को ही छल रहे हैं।

◇◇◇

कितनी लाचार कितनी बिस्मिल मैं,
कितनी बेबस हुई हूँ ऐ दिल मैं

आशना तब रहा है मेरा दिल,
उसकी ख़ुशियों में जब थी शामिल मैं।

दीप अरमाँ के ख़ुद बुझाए हैं,
अपनी ख़ुशियों की ख़ुद ही क़ातिल मैं।

दिल हक़ीकत से हो गया वाकिफ़,
हो गई ख़ुद से कैसे ग़ाफ़िल मैं?

एक भी वादा कर सकूँ पूरा,
इतनी भी तो नहीं हूँ क़ाबिल मैं।

किस की करती शिकायतें 'देवी',
सामने शीशा और मुक़ाबिल मैं।

◇◇◇

कभी न किसी से कड़ी बात कहना,
न होगा किसी को भी सुनना गवारा।

सफ़र में रहे साथ रख़्ते-सफ़र भी,
कभी पड़ न जाए कहीं तुमको रुकना।

कभी बाँध पाओगे क्या तुम समय को,
जिधर वो चले हैं, उधर तुमको चलना।

कभी दौड़ में तू था पहले, कभी मैं,
पड़ा तुझको मुझको कई बार थकना।

फिसलती हुई रेत है उम्र मानो,
न जाने यूँ सहरा में कब तक है रहना।

ग़नीमत है साँसों का चलना ऐ 'देवी',
थमेंगी जो ये तो तुझे भी है थमना।

◇◇◇

ज़िंदगी इस तरह से जीता हूँ,
जैसे हर वक़्त ज़हर पीता हूँ।

हाल दिल का सुनाके क्या हासिल,
क्या करूँ अपने होंठ सीता हूँ।

ऐसा जीना भी कोई जीना है,
रोज़ मरता हूँ रोज जीता हूँ।

इल्म इतना हुआ के जान गई,
मैं ही क़ुर्आन मैं ही गीता हूँ।

दर्द साँझा जो सबका है 'देवी',
मैं उसी दर्द की तो कविता हूँ।

◇◇◇

क्या बताऊँ तुम्हें मैं कैसी हूँ,
पीती रहती हूँ फिर भी प्यासी हूँ।

तुम मिरे आँसुओं की क़द्र करो,
मैं इन्हीं में पिघल के बहती हूँ।

सामना उनसे हो नहीं सकता,
बस इसी से उदास रहती हूँ।

भर गया दिल हमारा अपनों से,
अब तो ग़ैरों की राह चलती हूँ।

मेरी फ़ितरत अजीब है 'देवी',
कोई तड़पे तो मैं तड़पती हूँ।

◇◇◇

कुछ तो इसमें भी राज़ गहरे हैं,
कहते गूँगे हैं सुनते बहरे हैं।

रिश्ते, रिश्तों को अब भी ठगते हैं,
झूठ के जब से सच पे पहरे हैं।

मेरी फ़र्याद कोई कैसे सुने,
जितने बैठे हैं लोग बहरे हैं।

लब हिलाना भी जुर्म ठहराया,
मेरे होंठों पे गोया पहरे हैं।

फूल झड़ते हैं उनकी बातों से,
लफ़्ज़ जितने हैं सब सुनहरे हैं।

वक़्त अब तक न बन सका मरहम,
जख़्म जितने भी हैं वो गहरे हैं।

ख़्वाब रेशम के बुनती हूँ 'देवी',
रात चाँदी, तो दिन सुनहरे हैं।

◇◇◇

बेसबब बेरुख़ी भी होती है,
प्यार में बेकसी भी होती है।

आओ तन्हाई में करें बातें,
राज़दाँ ख़ामुशी भी होती है।

खिल न पाए बहार में भी जो,
एक ऐसी कली भी होती है।

रुख़ पे जो आँसुओं को छलका दे,
ग़म नहीं, वो ख़ुशी भी होती है।

लोग जिस बात को ग़लत समझे,
दर हक़ीक़त सही भी होती है।

मौत से भी कहें जिसे बदतर,
एक यूँ ज़िंदगी भी होती है।

घौंप दे पीठ में छुरी हँसकर,
इस तरह दोस्ती भी होती है।

प्यास बढ़ जाती है बुझाने से,
ऐसी इक तिश्नगी भी होती है।

बेदिली से करे अगर 'देवी',
बेअसर बंदिगी भी होती है।

◇◇◇

बंद हैं खिड़कियाँ मकानों की,
क्या ज़रूरत नहीं हवाओं की।

सुर्ख़रू हो न ज़िंदगी फिर क्यों,
साथ जब हों दुआएँ माओं की।

पास होकर भी दूर थी मंज़िल,
भटके हम जुस्तजू में राहों की।

ये फ़साना है बेगुनाही का,
पाई हमने सज़ा गुनाहों की।

तन को ढाँपे है शर्म की चादर,
पड़ न जाए नज़र परायों की।

डर से पीले हुए सभी पत्ते,
आहटें जब सुनी ख़िज़ाओं की।

ढूँढे 'देवी' उसे कहाँ ढूँढे,
कुछ कमी ही नहीं ठिकानों की।

◇◇◇

ज़िंदगी रंग क्या दिखाती है,
ये हँसाती है और रुलाती है।

यह तो फ़ितरत है उसकी क्या कहिए,
शम्अ जलती है और जलाती है।

ख़ुद से मिलने के वास्ते अक्सर,
बेख़ुदी में वो डूब जाती है।

मुश्किलें जब भी सामने आईं,
ज़िंदगी हौसला बढ़ाती है।

झूठ-सच की दुकाँ खुली जब से,
वो ज़मीरों को आज़माती है।

भीड़ सोचों की और गर्दिश की,
क्या परेशानियाँ बढ़ाती है।

जो नचाते थे सबको उँगली पर,
आज दुनिया उन्हें नचाती है।

रूठकर मुझसे ज़िंदगी 'देवी',
कौन जाने कहाँ वो जाती है।

◇◇◇

ज़माने से रिश्ता बनाकर तो देखो,
समझ बूझ से तुम निभाकर तो देखो।

किया है जो नफ़रत ने पैदा दिलों में,
वो अंतर दिलों से मिटाकर तो देखो।

तुम्हें देखकर क्यों लजाता है शीशा,
कभी अपनी पलकें उठाकर तो देखो।

गिराते हो अपनी नज़र से जिन्हें तुम,
उन्हें पलकों पर भी बिठाकर तो देखो।

उठाना है आसान औरों पे उँगली,
कभी खुद पे उँगली उठाकर तो देखो।

न घबराओ 'देवी' ग़मों से तुम इतना,
ज़रा इनसे दामन सजाकर तो देखो।

◇◇◇

नगर पत्थरों का नहीं आशना है,
मैं ज़िंदा हूँ इसमें मगर दिल मरा है।

न मेरी वो सुनते न अपनी सुनाते,
समझ में न आए उन्हें क्या हुआ है।

रहा लूटता वो वफ़ा के बहाने,
ये माना अभी वो सनम बेवफ़ा है।

न छोटी ख़ुशी से कभी मोड़ना मुँह,
कि सुकरात का जाम हमको अता है।

मुझे छोड़ कर सबने पाए हैं मोती,
नसीबों को शायद हमीं से गिला है।

न मायूस हो ज़िंदगी से ऐ 'देवी',
अभी और जीने का मौसम बचा है।

◇◇◇

रेत पर घर जो अब बनाया है,
अपनी क़िस्मत को आज़माया है।

रिश्ता इस तरह से निभाया है,
अपना होकर भी वो पराया है।

मैं सितारों से बात करती थी,
बीच में चाँद उतर आया है।

बात जब अनुसनी रही मेरी,
ख़ामोशी को गले गलाया है।

क़त्ल उसने किया है तो फिर क्यों,
सर पे इल्ज़ाम मेरे आया है।

रिश्ता वो ही निभाएगा 'देवी',
जिसको रिश्ता समझ में आया है।

◇◇◇

चलें तो चलें फ़िक्र की आँधियाँ,
न छोड़ो कभी ज़ीस्त की बाजियाँ

न मंज़िल पे पहुँचें अगर ये क़दम,
तो रफ़्तार की समझो कमज़ोरियाँ।

सफ़र तो सफ़र है कठिन या सरल,
न मंज़िल की देखो कभी दूरियाँ।

सहारों के जुगनू चमकते रहें,
भले आज़माएँ हमें आँधियाँ।

रक़ीबों से 'देवी', कभी दोस्ती,
निभाओ तो समझोगी कठिनाइयाँ।

◇◇◇

दर्द से दिल सजा रहे हो क्यों,
ज़ख़्म दिल के दिखा रहे हो क्यों।

इक बयाबाँ है सामने फिर भी,
दिल की बस्ती बसा रहे हो क्यों।

तुम हो बौने पहाड़ के आगे,
अपना क़द फिर बढ़ा रहे हो क्यों।

पास ही तो तुम्हारी मंज़िल है,
दूर साहिल से जा रहे हो क्यों।

दिल की कश्ती भँवर में डूब गई,
साथ ख़ुद को डुबा रहे हो क्यों।

तंग सोचें हैं तंग राहें भी,
ऐसी गलियों से जा रहे हो क्यों।

जो तुम्हारा न बन सका 'देवी',
उसको ख़्वाबों में ला रहे हो क्यों।

◇◇◇

स्वप्न आँखों में बसा पाए न हम
याद तेरी पर भुला पाए न हम।

किस गिरावट ने हमें ऊँचा किया
कोई अंदाज़ा लगा पाए न हम।

दर्द के आँसू बहुत हमने पिए
ग़ैर का अहसाँ उठा पाए न हम।

हमने अश्कों से लिखी थी जो ग़ज़ल
दुख है ये तुमको सुना पाए न हम।

आईना अपनी ही सब कहता रहा
हाले-दिल अपना सुना पाए न हम।

आज़माए हौसले हमने सदा
छू बुलंदी को कभी पाए न हम।

◇◇◇

देखीं तब्दीलियाँ ज़मानों में,
क्यों हैं वीरानियाँ मकानों में।

सख़्त ज़ख़्मी था आस का पंछी,
कैसे उड़ता वो आस्मानों में।

होश में था ख़ुमारे-मदहोशी,
इक तमाशा था बादाख़ानों में।

धर्मों-मज़हब के नाम पर कैसी,
छिड़ गई जंग बदगुमानों में।

पाँव की धूल रख ली माथे पर,
जाने क्या मिल गया निशानों में।

आड़ में दोस्ती के अब 'देवी',
दुश्मनी निभ रही घरानों में।

◇◇◇

लगती है मन को अच्छी शाइर ग़ज़ल तुम्हारी,
आवाज़ है ये दिल की शाइर, ग़ज़ल तुम्हारी।

ये रात का अँधेरा तन्हाइयों का आलम,
ऐसे में सिर्फ़ साथी शाइर ग़ज़ल तुम्हारी।

नाचे हैं राधा मोहन, नाचे है सारा गोकुल,
मोहक ये कितनी लगती शाइर ग़ज़ल तुम्हारी।

है ताल दादरा ये और राग भैरवी है,
संगीत ने सजाई शाइर ग़ज़ल तुम्हारी।

मन की ये भावनाएँ, शब्दों में हैं पिरोईं,
है ये बड़ी रसीली, शाइर ग़ज़ल तुम्हारी।

अहसास की रवानी, हर एक लफ़्ज़ में है,
है शान शाइरी की शाइर ग़ज़ल तुम्हारी।

अनजान कोई रिश्ता, दिल में पनप रहा है,
धड़कन ये है उसी की, शाइर ग़ज़ल तुम्हारी।

दो अक्षरों का पाया जो ज्ञान तुमने 'देवी',
उससे निखर के आई शाइर ग़ज़ल तुम्हारी।

◇◇◇

ज़िंदगी मान लें बेवफ़ा हो गई,
मौत क्यों हम से आख़िर ख़फ़ा हो गई।

बस्तियाँ आजकल सब परेशान हैं,
शायद आबादियों से ख़ता हो गई।

दिल की बातें दिमाग़ों से समझा किए,
एक ये भी तुम्हारी अदा हो गई।

भीड़ में कोई चेहरा शनासा नहीं,
रस्मे-दुनिया भी हमसे जुदा हो गई।

सब गुनहगार 'देवी' मज़े में रहे,
बेगुनाही पे मुझको सज़ा हो गई।

◇◇◇

पंछी उड़ान भरने से पहले ही डर गए,
था जिनपे नाज़ उनको बहुत, बालो-पर गए।

तिनकों से मैंने जितने बनाए थे आशियाँ,
जलकर वो ग़म की आग में कैसे बिखर गए।

इन्सानियत को खा गई इंसान की हवस,
बर्बादियों की धूप में जलते बशर गए।

तेग़ों से वार करते वो मुझ पर तो ग़म न था,
लफ़्ज़ों के तीर चीर के मेरा जिगर गए।

कुरुक्षेत्र है ये ज़िंदगी रिश्तों की जंग है,
हम हौसलों के साथ हमेशा गुज़र गए।

तन मन से लिपटी रूह तो बीमार ही रही,
जितने किए इलाज वो सब बेअसर गए।

छोटे से घर में ख़ुश थी मैं कितनी बताऊँ क्या,
अफ़्सोस है के 'देवी' वो दिन गुज़र गए।

◇◇◇

ग़म के मारों में मिलेगा, तुमको मेरा नाम भी,
दिल-शिकस्तों में मिलेगा तुमको मेरा नाम भी।

सब की रखते हैं ख़बर जो, ख़ुद से रहकर बेख़बर,
उन अदीबों में मिलेगा तुमको मेरा नाम भी।

भीष्म बन कर सो रहे हैं सेज पर काँटों की जो,
उन सलीबों में मिलेगा तुमको मेरा नाम भी।

धन की दौलत की बदौलत रह गए कंगाल जो,
उन ग़रीबों में मिलेगा तुमको मेरा नाम भी।

इन्तेहाए-ज़ुल्म पर भी ज़ब्त से सीते हैं लब,
उन शरीफ़ों में मिलेगा तुमको मेरा नाम भी।

हार के पहले यक़ीं था जिनको अपनी जीत का,
उन यक़ीनों में मिलेगा तुमको मेरा नाम भी।

हाथ फैलाते नहीं 'देवी' जो दर पर ग़ैर के,
उन फ़क़ीरों में मिलेगा तुमको मेरा नाम भी।

◇◇◇

वो रूठा रहेगा उसूलों से जब तक,
नसीब उसके राज़ी न हों उससे तब तक।

क़दम दर क़दम आज़माइश है मेरी,
मुझे इम्तहानों में रक्खोगी कब तक।

गुनह करके जीना बहुत ही कठिन है,
कचोटे-ज़मीर उसका उसको न जब तक।

ख़ुशी और ग़म मुझको यकसाँ रहे हैं,
न आया कभी कोई शिकवा भी लब तक।

सदा पीठ पर जख़्म खाए हैं 'देवी',
ये तोहफ़े मिले मुझको अपनों से अब तक।

◇◇◇

जितना भी बोझ हम उठाते हैं,
उतनी गहराईयों में जाते हैं।

हार के ख़ौफ़ ही हराते हैं,
खेल से पहले हार जाते हैं।

मैं उठाकर नज़र उन्हें देखूँ,
वो हमीं से नज़र चुराते हैं।

क़तरा क़तरा वज़ूद से लेकर,
ख़्वाहिशों को लहू पिलाते हैं।

बदगुमानी का ज़हर है ऐसा,
सब हरे पेड़ सूख जाते हैं।

जो ज़रूरत न कम करें 'देवी',
वो कहाँ पल सुकूँ के पाते हैं।

◇◇◇

जो मुझे मिल न पाया रुलाता रहा,
याद के गुल्सिताँ में वो आता रहा।

जिस तरफ़ देखिए आग ही आग है,
आँसुओं से उसे मैं बुझाता रहा।

हौसले टूटकर सब बिखरने लगे,
गीत फिर भी मैं उनको सुनाता रहा।

ज़िंदगी हसरतों का दिया है मगर,
आँधियों में वही टिमटिमाता रहा।

ये अलग बात थी पत्थरों में बसा,
काँच के घर को अपने बचाता रहा।

दौर 'देवी' गया जो ग़ुजर कर अभी,
याद बीते दिनों की दिलाता रहा।

◇◇◇

ख़ुशी का भी छुपा ग़म में कभी सामान होता है,
कभी ग़म में ख़ुशी मिलने का भी इम्कान होता है।

हुई है आँख मेरी नम भरी महफ़िल में जाने क्यों,
यहाँ जज़्बात से हर शख़्स ही अनजान होता है।

गिला तुमने किया मुझसे समझ पाई नहीं तुमको,
समझ पाना तो ख़ुद को भी कहाँ आसान होता है।

ज़माना ख़ुदफ़रेबी है हक़ीक़त से नहीं वाक़िफ़,
यहाँ हर सच को झुठलाना बड़ा आसान होता है।

वही मक्कार होता है करे गुमराह जो सबको,
जो ख़ुद को ही छले अक्सर तो वो नादान होता है।

सहर हो शाम हो या रात तन्हाई रहे क़ायम,
करूँ क्या भीड़ को जब दिल मिरा वीरान होता है।

ख़ुशी में आके हर कोई बटोरेगा ख़ुशी 'देवी',
मुसीबत में जो काम आए वही इंसान होता है।

◇◇◇

हैरान है ज़माना, बड़ा काम कर गए,
हम मुश्किलों के दौर से हँस कर गुज़र गए।

ढूँढा किए वजूद को अपने ही आस-पास,
देखा जो आईना तो अचानक बिखर गए।

अश्कों को हमने आँखों से बहने नहीं दिया,
सैलाब ख़ुश्क आँखों से बहते मगर गए।

आबाद वो वहाँ न थे, उजड़ी हूँ मैं यहाँ,
लेकर ख़बर हवाओं के रुख, हर डगर गए।

इतने सवाल हैं यहाँ किस किस का दें जवाब,
हैं मसअले वहीं के वहीं हल ठहर गए।

'देवी' कभी दवा न दुआ काम आ सकी,
ऐसा हुआ इलाज कि सब ज़ख्म भर गए।

◇◇◇

न सावन है न भादों है न बादल का ही साया है,
मिरे अश्कों से लेकिन एक इक ज़र्रा नहाया है।

जिसे तू देख कर घबरा रहा है ऐ मिरे हमदम,
नहीं है ये तिरा दुश्मन ये तेरा ही तो साया है।

जो बरसों से सजाकर थी रखी तस्वीर आँखों में,
उसी तस्वीर ने मेरा सुकूने-दिल चुराया है।

ज़माने में कहाँ होती हैं पूरी चाहतें सबकी,
मुकम्मल कौन-सी शय है किसी ने जिसको पाया है।

हुईं नम क्यों ये आँखें बैठकर इस बज़्म में 'देवी',
किसीने ग़म को सुर और ताल में गाकर सुनाया है।

◇◇◇

भटके हैं तेरी याद में जाने कहाँ-कहाँ,
तेरी नज़र के सामने खोए कहाँ-कहाँ।

रिश्तों की डोर में बँधे जाते कहाँ-कहाँ,
उल्झन में राहतें कोई ढूँढे कहाँ कहाँ।

ख़्वाहिश की क़ैद में सदा जीवन किया बसर,
अब उसके रास्ते खुले जाके कहाँ कहाँ।

ऐ ज़िंदगी सवाल तू, तू ही जवाब है,
तुझसे मिलन की आस में भटके कहाँ कहाँ।

हे दाग़ दाग़ दिल मिरा मुस्कान होंठ पर,
रौशन हुए हैं रास्ते, दिल के कहाँ-कहाँ।

वो लामकाँ में रहता है, अपनी बिसात क्या,
हम लामकाँ को ढूँढते फिरते कहाँ-कहाँ।

'देवी' न मुझसे पूछिए कुछ ख़ुद को देखिए,
होते हैं इस जहान में झगड़े कहाँ कहाँ।

◇◇◇

हम अभी से क्या बताएँ क्या हमारे दिल में है,
कश-म-कश में हैं अभी हम, हर क़दम मुश्किल में हैं।

यूँ तो रौनक़ हर तरफ़ है फिर भी दिल लगता नहीं,
क्या बताएँ हम किसी को क्या कमी महफ़िल में है।

पूछो उससे बोझ हसरत का लिए फिरता है जो,
क्या मज़ा उस ज़िंदगी में गुज़री जो किल किल में है।

काँपती है सोच की कश्ती मिरी मझधार में,
बरकरार उम्मीद इस पर भी लबे-साहिल में है।

धूप से तपती हुई वीरान हैं राहें सभी,
शबनमी अंदाज़ देवी देख क्या मंज़िल में है।

◇◇◇

मिलने की हर ख़ुशी में बिछड़ने का ग़म हुआ,
फिर भी हमें ख़ुशी थी कि उनका करम हुआ।

नज़रें मिलीं तो मिलते ही झुकती चली गईं,
फिर भी हया का बोझ न कुछ उनपे कम हुआ।

कुछ और भी गुलाब थीं आँखें ख़ुमार में,
कुछ और भी हसीन वो मेरा सनम हुआ।

कुछ तो चढ़ा था पहले ही हम पर नशा मगर,
कुछ आपका भी सामने आना सितम हुआ।

आती नहीं है प्यार की ख़ुशबू कहीं से अब,
खिलना ही जैसे प्यार के फूलों का कम हुआ।

नज़रों से दूर था मेरा चाहत भरा नगर,
फिर भी वो आस-पास था ऐसा भरम हुआ।

'देवी' वफ़ा पे जिसकी हमें नाज़ था बहुत,
वो बेवफ़ा हुआ तो बहुत हमको ग़म हुआ।

◇◇◇

गुज़रे हुए सुलूक पे सोचो न इस क़दर,
मेहमान बनके रहना, जो रहना है मेरे घर।

जो दिल में है तुम्हारे, छुपाओ गिला नहीं,
सब कुछ बता रही है तुम्हारी ये चश्मे-तर।

फ़न सीखने की आरज़ू पूरी हो किस तरह,
भटकी हुई है सोच मिरी आज दरबदर।

तुम दे सको दुआ न अगर, बददुआ न दो,
हमने सुना है उल्टा भी हो जाता है असर।

दरिया ये दिल के दर्द का करने चली हूँ पार,
कब इसमें डूब जाऊँ मैं, रहता है इसका डर।

'देवी' बता दिया था उन्हें राज़ दर्द का,
थे ऐसे राज़दार कि सबको हुई ख़बर।

◇◇◇

देते हैं ज़ख़्म ख़ार तो देते महक गुलाब,
फिर भी मैं तोड़ लाई हूँ, उनको अजी जनाब।

कोई समझ न पाए तो फिर ज़िंदगी सवाल,
गहराइयों में उसकी है हर बात का जवाब।

पढ़ती पढ़ाती ही रही नादान मैं गँवार,
ऐ ज़िंदगी न पढ़ सकी तेरी कभी किताब।

उल्झो न आँधियों से कभी, मात खाओगे,
सीना न तान कर चलो मौसम है अब ख़राब।

है सल्तनत का शौक़ नशीली शराब-सा,
लोगों से वोट माँग के बनते रहे नवाब।

इक आरज़ू है दिल में फ़कत उसके दीद की,
मेरा हबीब क्यों नहीं आता है बेहिजाब।

'देवी', बहुत सुना किये हम राग-रागिनी,
मदहोश जो करे वही घट में बजे रबाब।

◇◇◇

क़िस्मत हमारी हमसे ही माँगे है अब हिसाब,
ऐसे में तुम बताओ कि क्या दें उसे जवाब।

अच्छाइयाँ, बुराइयाँ दोनों हैं साथ साथ,
इस वास्ते हयात की रंगीन है किताब।

घर बार भी यहीं है, परिवार भी यहीं,
घर से निकल के देखा तो दुनिया मिली ख़राब।

पूछूँगा उनसे इतने ज़माने कहाँ रहे,
मुझको अगर मिलेंगे कहीं भी वो बेनक़ाब।

मुस्काते मंद मंद हैं हर इक सवाल पर,
हर इक अदा जवाब की कितनी है लाजवाब

पिघले जो दर्द दिल के, सैलाब बन बहे,
आँखों के अश्क बन गए मेरे लिये शराब।

'देवी' सुरों को रख लिया मैंने सँभालकर,
जब दिल ने मेरे सुन लिया बजता हुआ रबाब।

◇◇◇

आँसुओं को रोक पाना कितना मुश्किल हो गया,
मुस्कराहट लब पे लाना कितना मुश्किल हो गया।

बेख़ुदी में छुप गई मेरी ख़ुदी कुछ इस तरह,
ख़ुद में ख़ुद को ढूँढ पाना कितना मुश्किल हो गया।

जीत कर हारे कभी तो हार कर जीते कभी,
बाज़ियों से बाज़ आना कितना मुश्किल हो गया।

बिजलियों का बन गया है वो निशाना आज कल,
आशियाँ अपना बचाना कितना मुश्किल हो गया।

हो गया है दिल धुआँ-सा कुछ नज़र आता नहीं,
धुँध के उस पार जाना कितना मुश्किल हो गया।

यूँ झुकाया अपने क़दमों पर ज़माने ने मुझे,
बंदगी में सर झुकाना कितना मुश्किल हो गया।

साथ 'देवी' आपके मुश्किल भी कुछ मुश्किल न थी,
आपके बिन मन लगाना कितना मुश्किल हो गया।

◇◇◇

कौन किसकी जानता है आजकल दुश्वारियाँ,
जानते हैं लोग अपनी बेसरो-सामानियाँ।

मैंने ग़ुरबत में हमेशा देखी हैं आसानियाँ,
दौलतो-सर्वत से लेकिन बढ़ गई दुश्वारियाँ।

मुस्करा कर राहतों का लुत्फ़ लेते हैं सभी,
रास्ते दुश्वार हों तो बढ़ती है बेताबियाँ।

ढेर से तोहफ़े हमें देती है हर पल ज़िंदगी,
मिट गईं है इस तरह अपनी सभी दुश्वारियाँ

चाहती हूँ मैं मिटा दूँ हर नए उस अक्स को,
लौट कर रह रह के फिर आ जाती हैं परछाइयाँ।

साया भी मेरा मुझीसे है ख़फ़ा 'देवी' बहुत,
नागवार उसको भी हैं शायद मिरी नादानियाँ।

◇◇◇

साथ चलते देखे हमने हादसों के क़ाफ़िले,
राह में रिश्तों के मिलते रिश्वतों के क़ाफ़िले।

दूर कितने जा चुके हैं दिक्कतों के क़ाफ़िले,
साथ मेरे चल रहे हैं हौसलों के क़ाफ़िले।

जाने क्यों रखती हैं मुझसे दुश्मनी आबादियाँ,
साथ चलते हैं मिरे बर्बादियों के काफ़िले।

बीच में रिश्तों के कोई तो कड़ी कमज़ोर है,
टूटते हैं किसलिए यूँ बंधनों के क़ाफ़िले।

हम कहाँ ढूँढें वो अपनापन वो आँगन प्यार का,
दिन ब दिन बढ़ते रहे हैं अनबनों के क़ाफ़िले।

◇◇◇

मेरा शुमार है ये हज़ारों में जाने क्यों,
मुझको लगा दिया है क़तारों में जाने क्यों।

गुल्शन में रहके ख़ार मिले मुझको इस क़दर,
अब तो ख़िज़ाँ लगे है बहारों में जाने क्यों।

वैसे तो बात होती है उनसे मिरी सदा,
पर आज हो रही हैं इशारों में जाने क्यों।

सौ-सौ को जो तरसते रहे उम्र भर सदा,
होती है उनकी गिनती हज़ारों में जाने क्यों।

नफ़रत वहाँ मिली है जहाँ ढूँढा अपनापन,
देखी न पुख़्तगी ही सहारों में जाने क्यों।

वादे वही रहे हैं वफ़ाएँ वही रहीं,
उठ-सा गया यक़ीन ही यारों में जाने क्यों।

◇◇◇

शहर में उज़ड़ी हुई देखी कई हैं बस्तियाँ,
हर तरफ़ देखे खँडर, देखीं फ़क़त बर्बादियाँ।

कहते हैं बिन कान दीवारें भी सुन लेती हैं बात,
ग़ौर से सुनकर तो देखो तुम कभी ख़ामोशियाँ।

खौफ से जीते हो क्यों तन्हाइयों से भागकर,
ख़ुद से मिलने की है देरी भायेंगी तन्हाइयाँ।

पलकें आँखों के लिए बारे-गरां होती नहीं,
किरकिरी महसूस हो तो देख बस परछाइयाँ।

रिश्ते तो विश्वास से पलते हैं दौलत से नहीं,
किसलिये दिल टूटते, क्यों टूटती फिर शादियाँ?

धूप दुख और छाँव सुख का है समुंदर ज़िंदगी,
जो मुक़द्दर का सिंकदर वो ही जीते बाज़ियाँ।

◇◇◇

क्यों मचलता है माजरा क्या है,
ऐ मेरे दिल तुझे हुआ क्या है

रात भर करवटें बदलने का,
हूँ परेशाँ ये सिल्सिला क्या है।

जानती हूँ मैं दर्द की लज़्ज़त,
मुझसे पूछो के ज़ायक़ा क्या है।

दिल में मेरे हज़ार हैं अरमाँ,
गर न पूरे हों फ़ायदा क्या है।

ये तो तेरा हुआ है दीवाना,
तू मिरे दिल को जानता क्या है।

तेरे दिल के क़रीब रहकर भी,
तुझमें-मुझमें ये फ़ासला क्या है।

दिल में उठता है जो बता 'देवी',
'आख़िर इस दर्द की दवा क्या है।'

◇◇◇

क्यों ख़ुशी मेरे घर नहीं आती,
क्या उसे मैं नज़र नहीं आती।

उसकी जानिब है हर क़दम मेरा,
पास मंज़िल मगर नहीं आती।

ग़र गुज़र जाए रुत जवानी की,
लौट कर उम्र भर नहीं आती।

सूनी रातो में सोचती हूँ मैं,
ख़ुशनुमा क्यों सहर नहीं आती?

ख़्वाब देखूँ तो किस तरह देखूँ,
नींद तो रात भर नहीं आती?

जो हो मंज़िल-शनास ऐ 'देवी',
इक वही रह गुज़र नहीं आती।

◇◇◇

मेरा वजूद टूटके बिखरा यहीं कहीं,
मेरी नज़र से ढूँढ लो होगा यहीं कहीं

वीरान दिल की बस्तियाँ आबाद थीं कभी,
ख़ुशबू का सिलसिला कभी महका यहीं कहीं।

फूलों की सोहबतों ने यूँ आदत बिगाड़ दी,
भूली मैं कैसे ख़ार चुभा था यहीं कहीं।

जब भी मिली हैं मंज़िलें मेरे वजूद से,
राहों में मेरा क़ाफ़िला छूटा यहीं कहीं।

ख़ुशियों की ख़ाहिशें सभी सीने में क़ैद हैं,
अफ़्सोस ग़म भी पास मिलेगा यहीं कहीं।

बेदर्द वक़्त की चलीं कुछ ऐसी आँधियाँ,
'देवी' हमारा आशियाँ बिखरा यहीं कहीं।

◇◇◇

रेत पर तुम बनाके घर देखो,
कैसे ले जाएगी लहर देखो।

सारी दुनिया ही अपनी दुश्मन है,
कैसे होगी गुज़र बसर देखो।

शब की तारीकियाँ उरुज पे हैं,
कैसे होती है अब सहर देखो।

ख़ामुशी क्या है तुम समझ लोगे,
पत्थरों से भी बात कर देखो।

वो मेरे सामने से गुज़रे हैं,
मुझसे हों जैसे बेख़बर देखो।

रूह आज़ाद फिर भी क़ैद रहे,
तन में भटके हैं दर-बदर देखो।

सोच की शम्अ बुझ गई 'देवी',
दिल की दुनिया में डूबकर देखो।

◇◇◇

दोस्तों का है अजब ढब दोस्ती के नाम पर,
हो रही है दुश्मनी अब, दोस्ती के नाम पर।

इक दिया मैंने जलाया पर दिया उसने बुझा,
सिलसिला कैसा है या-रब, दोस्ती के नाम पर।

दाम बिन होता है सौदा, दिल का दिल के दर्द से,
मिल गया है दिल से दिल जब, दोस्ती के नाम पर।

जो दरारें ज़िंदगी डाले, मिटा देती है मौत,
होता रहता है यही सब, दोस्ती के नाम पर।

किसकी बातों का भरोसा हम करें ये सोचिए,
धोखे ही धोखे मिलें जब, दोस्ती के नाम पर।

कुछ न कहने में ही अपनी ख़ैरियत समझे हैं हम,
ख़ामुशी से हैं सजे लब, दोस्ती के नाम पर।

दिल का सौदा दर्द से होता है 'देवी' किसलिए,
हम समझ पाए न ये ढब, दोस्ती के नाम पर।

◇◇◇

उस शिकारी से ये पूछो पर क़तरना भी है क्या,
पर कटे पंछी से पूछो उड़ना ऊँचा भी है क्या।

आशियाना ढूँढते हैं शाख़ से बिछड़े हुए,
गिरते उन पत्तों से पूछो आशियाना भी है क्या।

अब बयाबाँ ही रहा है उसके बसने के लिए,
घर से इक बर्बाद दिल का यूँ उखड़ना भी है क्या।

महफ़िलों में हो गई है शम्अ रौशन, देखिए,
पूछो परवानों से उस पर उनका जलना भी है क्या।

वो खड़ी है बाल खोले आईने के सामने,
एक बेवा का सँवरना और सजना भी है क्या।

पढ़ न पाए दिल ने जो लिक्खी लबों पर दास्ताँ,
दिल से निकली आह से पूछो कि लिखना भी है क्या।

जब किसी राही को कोई रहनुमा ही लूट ले,
इस तरह 'देवी' भरोसा उस पे रखना भी है क्या।

◇◇◇

देखकर तिरछी निगाहों से वो मुस्काते हैं,
जाने क्या बात मगर करने से शरमाते हैं।

मेरी यादों में तो वो रोज चले आते हैं,
अपनी आँखों में बसाने से वो कतराते हैं।

दिल के गुलशन में बसाया था जिन्हें कल हमने,
आज वो बनके ख़लिश ज़ख्म दिए जाते हैं।

बेवफ़ा मैं तो नहीं हूँ ये उन्हें है मालूम,
जाने क्यों मुझको ख़तावार वो ठहराते हैं।

मेरी आवाज़ उन्होंने भी सुनी है, फिर क्यों,
सामने मेरे वो आ जाने से कतराते हैं।

दिल के दरिया में अभी आग लगी है जैसे,
शोले कैसे ये बिना तेल लपक जाते हैं।

रंग दुनिया के कई देखे हैं 'देवी' लेकिन,
प्यार के इंद्रधनुष याद बहुत आते हैं।